समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

पाक्षिक

# प्रज्ञा अभियान

16 जनवरी 2017

वर्ष-29, अंक-14

प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जनवरी 2017

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news.shantikunj@gmail.com, news@awgp.in

वार्षिक चंदा ₹ 40/- विदेश में ₹ 500/- प्रति अंक ₹ 2/-

2 सम्पादकीय

इस वसन्त पर्व पर समाज में सृजन प्रेरणा संचार के विशेष-व्यापक प्रयास करें

जन-जन तक नवसृजन क्रान्ति का संदेश पहुँचे, नयी उमंगों की कोपलें फूटें

गुजरात की धरती से उठी क्रान्ति की पुकार 3

चलो बदल दें राह समय की

युग साहित्य के हैंगर लगाने का बृहद् अभियान 5

ब्रक्सीआनो, इटली में देव संस्कृति विस्तार की अभिनव पहल 6

7

जीवन को लयबद्ध करने वाला गीत है गीता- डॉ. प्रणव जी

मुम्बई में सेमीनार- 'दैनंदिन जीवन में गीता'

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में है जीवन का उत्थान, संसार का समाधान 8

(30वाँ ज्ञानदीक्षा समारोह)

# राजनीति उच्च आदर्शों से परिपूर्ण हो

## सरकार और शासन में सच्चरित्र-राष्ट्रभक्त लोगों को पहुँचाना समाज की नैतिक जिम्मेदारी है

### समाज पर राजनीति का प्रभाव

राजनीति ने आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया है, इसलिए उसका महत्त्व बढ़ गया है। प्राचीनकाल में न्याय और व्यवस्था तक ही शासन का हस्तक्षेप होता था, पर अब उसका क्षेत्र बहुत बढ़ गया है और जीवन के हर क्षेत्र को राजनीति प्रभावित करती है। स्वास्थ्य, संस्कृति, भाषा, साहित्य, कला, विज्ञान जैसे जन रुचि के विषय भी अब राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र में आ रहे हैं। शिक्षा, उत्पादन, श्रम, व्यवसाय, शासन, न्याय, निर्माण, विज्ञान, शिल्प आदि तो पहले से ही उसके नियन्त्रण में पहुँच चुके हैं। धीरे-धीरे जनजीवन का हर क्षेत्र राजनीतिक प्रभाव के अन्तर्गत आता चला जा रहा है।

जनजीवन में अपनी प्रमुखता रखने वाली राजनीति में, शासन तन्त्र में यदि कहीं दोष रहते हैं, तो उसका दुष्परिणाम जन-साधारण को बुरी तरह भुगतना पड़ता है। इसलिए शासन तन्त्र के संचालकों का उच्च चरित्र से, उच्च आदर्शों से परिपूर्ण होना आवश्यक है। ''यथा राजा तथा प्रजा'' की उक्ति असत्य नहीं है। बड़ों को देखकर छोटे उनसे प्रभाव ग्रहण करते हैं, अनुकरण को अग्रसर होते हैं।

प्राचीनकाल में सन्तों, ऋषियों और ब्राह्मणों का राजा और प्रजा सब पर नियन्त्रण था, उनका व्यक्तित्व ऊँचा माना जाता था, इसलिए जनता उनकी भावनाओं और प्रेरणाओं से प्रभावित होकर अपनी दिशा निर्धारित करती थी। अब वह स्थान शासन-संचालकों को मिल रहा है। उन्हीं के वक्तव्यों, भाषणों, गतिविधियों और योजनाओं से अखबार, रेडियो, पुस्तक भरे हैं। सभा-सम्मेलनों में उन्हीं की चर्चा प्रधान रूप से होती है। जनचर्चा का विषय वे ही हैं। किसी बिगाड़ या सुधार के लिए उन्हीं को उत्तरदायी माना जाता है। इतनी ऊँची स्थिति जिस वर्ग ने प्राप्त कर ली है, उन शासन-संचालकों को प्रचीन काल के सन्तों और ऋषियों के समान ही आदर्श होना चाहिए, अन्यथा राज्य कर्मचारियों पर ही नहीं, जन साधारण पर भी उनकी प्रतिक्रिया होगी। हीन चरित्र वालों का शासन वर्ग कभी भी जनप्रेरणा का प्रकाश स्तम्भ नहीं बन सकता।

### आज का सबसे बड़ा संकट

देशगत राजनीति पर विचार किया जाय या अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर, सभी क्षेत्रों में उच्च चरित्र के मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इसी एक कमी के कारण समस्त विश्व की जनता क्षुब्ध और निराश होती चली जा रही है। संसार के राजनीतिज्ञों के पास सारे साधन मौजूद हैं। उच्च शिक्षा, सुविकसित मस्तिष्क, चतुर सलाहकार, विज्ञान, जन-सहयोग सभी कुछ तो उन्हें प्राप्त है, कमी केवल उदारता और उदात्त भावनाओं की है।

काश आज की दुनिया का नेतृत्व किन्हीं महापुरुषों के हाथ रहा होता। काश गाँधी, ईसा, बुद्ध, सुकरात, कनफ्यूशियस सरीखी आत्माओं के हाथों शासनाध्यक्षों का कार्य संचालित हुआ होता तो दुनियाँ आज की स्थिति में पड़ी न रहकर स्वर्ग बन गयी होती। काश राजनीति ने कूटनीति (धूर्तता) का रूप छोड़कर धर्मनीति बनना स्वीकार किया होता तो आज सर्वत्र शान्ति, प्रेम और आनन्द की ही वर्षा होती। सम्पन्नता, शिक्षा, कला, विज्ञान एवं चतुरता बढ़ रही है, पर चरित्र बल घट रहा है। संसार में शासन तन्त्र अधिक शक्तिशाली बनते जा रहे हैं, पर उनकी वह विशेषता घट रही है, जिसके प्रभाव से जनमानस में प्रेरणा और आशा का संचार होता है।

आज जबकि जनजीवन के सारे साधन राजनीति के प्रभाव क्षेत्र में चले जा रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि उसके नेता और संचालकों का व्यक्तित्व, चरित्र एवं भावना का स्तर इतना ऊँचा हो कि दण्ड-भय से नहीं श्रद्धा से अवनत होकर लोग उनका अनुसरण करने लग जायें। इसी से जन-जीवन में सच्ची प्रगति का संचार हो सकता है। यदि यह क्षेत्र दुर्बल बना रहा, बिल्ली के गले में घण्टी न बँध सकी तो भ्रष्टाचार की स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी। जनता सरकार को दोष देती रहेगी और सरकार जनता का कसूर बताती रहेगी। समस्या जहाँ की तहाँ उलझी पड़ी रहेगी।

### शासक नहीं, सृजेता चाहिए

अनीति को रोकना और साधनों को बढ़ाना शासन का कार्य है। सबको समान अवसर तथा समान न्याय प्राप्त हो, ऐसी स्थिति उत्पन्न करना राजकीय उत्तरदायित्व माना गया है। इन उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए राज्य कर्मचारियों को न्याय-कानून के प्रति नितान्त निष्ठावान, निर्लोभ, निष्पक्ष एवं कर्तव्यपरायण होना चाहिए। कानून तो पुस्तकों में बन्द रहता है। उसका पालन करना राज्य कर्मचारियों का काम है। उनका चरित्र उच्च आदर्शवादी होना ही प्रजा की सुख-शान्ति की गारण्टी हो सकती है। यदि यह शासक वर्ग अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों की उपेक्षा करेगा तो प्रजा का न्याय पर से विश्वास कम होता चला जायेगा और हर क्षेत्र में अनीति पनपेगी और अधिकारियों को अपने पक्ष में करके दुष्ट लोग जनता को संत्रस्त करेंगे। अपराधों की रोकथाम के समस्त उपाय एक ओर रखकर तोला जाय तो कार्यकर्त्ताओं की ईमानदारी ही अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। इसके अभाव में नाना प्रकार की योजनायें बनती-बिगड़ती रह सकती हैं पर जनहित का, समस्या का ठीक समाधान न हो सकेगा।

बहुत समय से अनेक विचारशील विद्वान यह बताते रहे हैं कि सुरक्षा की समस्या को हल करने के लिए राष्ट्रीय चरित्र की ही सबसे अधिक आवश्यकता है। चीन-पाकिस्तान के आक्रमणकारी इरादों को असफल करने के लिए जहाँ सुशिक्षित सेना और आधुनिक हथियारों की आवश्यकता है वहाँ देशभक्ति, स्वाभिमान, दृढ़ता, त्याग की भावना और उच्च चरित्र भी नितान्त आवश्यक है। शक्ति का वास्तविक स्रोत भावनाओं की प्रबलता, दृढ़ संकल्प, आदर्शनिष्ठा और उच्च चरित्र में सन्निहित रहता है। भूतकाल में इन्हीं गुणों की कमी से हमें विदेशी आक्रमणों का शिकार होना पड़ा है। यदि इन दोषों को सुधार लिया जाय तो भारत का प्रत्येक नागरिक टैंकों, तोपों और जहाजों की शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली सिद्ध हो सकता है और उसके आगे चीन बेचारा तो क्या, संसार की समस्त युद्ध लिप्सु शक्तियाँ इकट्ठी होकर भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। सुरक्षा के लिए इसी सच्ची शक्ति का जागरण अभीष्ट है।

### जनसहयोग भी जरूरी है

सरकार के सामने अनेकों रचनात्मक काम करने को पड़े हैं। उनकी सफलता-असफलता इस बात पर निर्भर रहेगी कि राज्य कर्मचारी कितनी ईमानदारी से उन्हें कार्यान्वित कर रहे हैं। देशभक्ति, लोकहित और सामूहिकता की भावना यदि जनमानस में जाग्रत् रहेगी तो उन सरकारी योजनाओं को प्रजा का आवश्यक सहयोग एवं समर्थन मिल सकेगा। यदि लोगों के मनों में सीमित स्वार्थ ही समाया रहे, वे अपने मतलब से मतलब की बात के अतिरिक्त और कुछ सुनना-समझना ही न चाहें, तो राष्ट्र की प्रगति कैसे सम्भव होगी? नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करने की इच्छा यदि लोगों में न हो तो सरकारी योजनाओं को, राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुँचाने वाले कार्य ही होते रहेंगे।

सरकारें कितने ही अच्छे कार्य करना चाहती है। उनके लिए योजनाएँ बनातीं और खर्च भी करती हैं, पर जनसहयोग के अभाव में वे स्वप्न साकार नहीं हो पाते। एक हाथ से ताली नहीं बजती। केवल शासन के द्वारा ही सब कुछ नहीं हो सकता। बुराईयों को दूर करने के और अच्छाई को बढ़ाने के लिए जन सहयोग आवश्यक है। यह कार्य कर्तव्यनिष्ठ, देशभक्त और नागरिक उत्तरदायित्वों को समझने वाले लोग ही कर सकते हैं। जिन लोगों में यह भावना विकसित नहीं हो पायी, उनकी गणना नर-पशुओं में ही की जा सकती है और वे केवल सरकारी प्रयत्नों के आधार पर ही प्रगतिशील नहीं बन सकते। आर्थिक अनुदान या अन्य साधन-सामग्री की जन-कल्याण के लिए जितनी आवश्यकता है, उससे असंख्य गुनी आवश्यकता इस बात की है कि जनमानस में कर्तव्य के प्रति निष्ठा उत्पन्न हो। यदि यह भावनात्मक विकास न हो सका तो बाहरी विकास योजनाओं का भविष्य उज्जवल नहीं हो सकता।

### बड़ा कीमती है आपका वोट

जातिवाद के नाम पर, दाब-धौंस में आकर, प्रलोभनों और खुशामदों से प्रभावित होकर जो लोग चुनाव के समय अपना 'वोट' जैसी राष्ट्रीय धरोहर का ठीक उपयोग नहीं कर सकते, उन्हें अच्छे लोगों के चुने जाने से होने वाला लाभ नहीं मिल सकता। उन्हें आदर्शवादी सरकार की भी आशा नहीं करनी चाहिए। बीज से पेड़ उत्पन्न होता है। वोट देते समय हमारा मन जिस उच्च या निकृष्ट भूमि से प्रभावित होता है, उसी के अनुरूप सरकार चुनकर सामने आ जाती है। प्रजातन्त्र में जनमत को बहुत महत्त्व प्राप्त है। इस महत्त्वपूर्ण शक्ति का जहाँ भी ठीक उपयोग होता है, वहाँ शासन में अच्छे लोग पहुँचते हैं और उनके द्वारा व्यवस्थायें चल पड़ती हैं। राजनीति आज की एक प्रचण्ड शक्ति है। इसमें संव्याप्त भ्रष्टाचार मिटाने, मानव जीवन में सुख-शान्ति लाने के लिए कूटनीति का परिवर्तन धर्मनीति में होना चाहिए।

**वाङ्मय खण्ड -राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने?, पृष्ठ 3.66 से संकलित, सम्पादित**

# इस वसन्त पर्व पर समाज में सृजन प्रेरणा संचार के विशेष-व्यापक प्रयास करें

## जन-जन तक नवसृजन क्रान्ति का संदेश पहुँचे, नयी उमंगों की कोपलें फूटें

### वसन्त पर्व : दर्शन एवं कार्यक्रम

वसन्त पञ्चमी को ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी 'माता सरस्वती' के अवतरण का दिन मानते हैं। ज्ञान सनातन है। सृष्टि की उत्पत्ति परमात्मा के संकल्प से हुई। क्षणभर में अनेक विविधताओं से युक्त जड़ और चेतन जगत अस्तित्व में आ गया। इस प्रकिया को आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने 'बिगबैंग' (महाविस्फोट) नाम दिया है।

किन्तु बाद में वैज्ञानिकों ने अध्ययन-चिन्तन किया तो एक और बात उनकी समझ में आयी। यह सृष्टि अस्त-व्यस्त नहीं है, नियमबद्ध है, अनेक विशेषताओं को अपने अन्तर में सँजोये हुए है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस पदार्थपरक विश्व की रचना के पहले विशिष्ट ज्ञान का एक प्रवाह उमड़ा होगा। पदार्थ के पहले चेतना का, ज्ञान का विस्फोट हुआ होगा। यह तथ्य समझ में आने पर पदार्थ विज्ञानियों ने बिगबैंग की थ्योरी (महाविस्फोट के सूत्र) में संशोधन किया। स्वीकार किया कि 'इंटेलिजेंस केम फर्स्ट' पदार्थ बनने से पहले ही चेतन-ज्ञान का विस्तार हुआ।

कोई श्रेष्ठ वस्तु बने और उसका सदुपयोग हो इसके लिए 'ज्ञान' होना जरूरी है। ज्ञान की दोनों धाराएँ आवश्यक हैं। वस्तु को ठीक-ठीक बनाने का ज्ञान और दूसरी है उसके सदुपयोग और रख-रखाव का ज्ञान। वस्तु को बनाने वाला ही उसके सदुपयोग और रखरखाव का ज्ञान भली प्रकार देता है।

परम पिता परमात्मा ने जीवन दिया है। उसी ने जीवन को उद्देश्यपूर्ण ढंग से भली प्रकार चलाने के लिए ज्ञान की धारा भी प्रवाहित की है। उसी के अभाव में व्यक्ति जीवन में क्लेश, कलह, पीड़ा, पतन की विडम्बनाएँ झेलता है। ज्ञान की धारा का लाभ उठाते ही जीवन का श्रेष्ठ सदुपयोग होने लगता है। वह प्रत्यक्ष जगत में 'साधन-धाम' और परोक्ष जगत में 'मोक्ष का द्वार' बन जाता है। वसन्त पर्व ज्ञान के प्रकाश का लाभ स्वयं उठाने और दूसरों तक पहुँचाने की साधना को प्रखरतर बनाने की प्रेरणा और ऊर्जा प्रवाह लेकर आता है। हम सबको इसका समुचित लाभ उठाने के लिए भरपूर प्रयास करने चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने **'ब्रह्मज्ञान का प्रकाश'** नामक पुस्तिका में इस संदर्भ में लिखा है-

दीपक जब स्वयं जलता है तो उसका प्रकाश चारों ओर फैलता है और उससे दूर तक का अन्धकार नष्ट होता है। तप, दूरदर्शिता और तत्त्वज्ञान का दृष्टिकोण अपनाने से जो अन्तर्ज्योति उत्पन्न होती है, उसी से जनता के अन्तःकरण में सत्य का प्रकाश प्रस्फुटित होता है। लोककल्याण और आत्मोद्धार का इससे अच्छा मार्ग और कोई नहीं हो सकता।

इस वसंत पर्व पर हमें योजनाबद्ध ढंग से ऐसे प्रयोग करने चाहिए कि 'आत्मोद्धार' और 'लोककल्याण' दोनों ही कार्यों के लिए हम अधिक प्रतिबद्ध और समर्थ बन सकें।

### आत्मोद्धार की दृष्टि से

आत्मोद्धार और लोककल्याण दो अलग-अलग उद्देश्य दिखते हैं, किन्तु वे आपस में जुड़े हैं। जो व्यक्ति स्वयं अनगढ़ है, वह दूसरों को सुगढ़ कैसे बनायेगा? जो स्वयं बेसुरा है वह किसी को स्वर ज्ञान कैसे दे पायेगा? इसी प्रकार जिसने आत्मकल्याण की साधना नहीं की है वह जनकल्याण के सूत्रों को कैसे लागू कर पायेगा? जो जनकल्याण के लिए प्रयत्न करेगा उसे आत्मकल्याण की साधना अनिवार्य लगने लगेगी। इसलिए वसन्त पर्व पर आत्मकल्याण और जनकल्याण की अपनी पात्रता बढ़ाने की संकल्पित साधना करनी चाहिए।

**आत्मोद्धार** क्या है? परमात्मा ने हमें अपने अंश से बनाया है। उसके सत्-चित-आनन्द रूप की झलक हर साधक को अपने अन्दर मिलनी चाहिए। लेकिन हम जब बाहरी माया से प्रभावित होने लगते हैं तो माया का आवरण अन्दर के प्रकाश को प्रकट-प्रस्फुटित नहीं होने देता। ज्ञान साधना के द्वारा उस माया के आवरण से उबर जाना ही आत्मोद्धार की साधना है। आत्मोद्धार-आत्मकल्याण चाहने वाले हर साधक को अपने जीवन के विभिन्न घटकों, अंगों, क्षमताओं का उपयोग ईश्वरीय उद्देश्य के लिए, उसीके अनुशासन में करने का अभ्यास करना होता है। युगऋषि ने लिखा है कि यह कार्य बहुत कठिन नहीं है। सहज क्रम में उस पथ पर बढ़ा जा सकता है।

- परमात्मा को अपने अंदर से कार्य करने दीजिए। आदि प्रभु की जो इच्छा है उसी के अनुसार चलने के लिए अपने आप को विवश कीजिए। परमात्मा को स्वयं अपनी मर्जी के अनुसार चलने को मजबूर न कीजिए। तुम्हारी इच्छा एक होनी चाहिए। तुम वही सर्वशक्तिमान परमात्मा हो, जिसने तमाम जगत को अपनी पवित्रता प्रदान की है और अणु-अणु में वही उत्कृष्ट तत्व ओतप्रोत कर दिया है, जो सत्य है, सुन्दर है तथा सर्वत्र शिव है।
- आत्म-निरीक्षण द्वारा मालूम कीजिए कि कितने अंशों में तुम ईश्वरेच्छा के अनुगामी बने हो? तुम्हारे कितने कार्य परमात्मा के लिए होते हैं? कितनी देर तुम 'स्व' की पूर्ति में व्यतीत करते हो?
- तुम्हारे विभिन्न अंगों का क्या अभिप्राय है? वे किस आशय से बनाये गये हैं? तुम्हारे नेत्रों का कार्य पवित्र से पवित्र वस्तुओं का दर्शन होना चाहिए। तुम कुरुपता में भी भव्यता खोज निकालो, प्रतिकूलता में भी सहायक तत्त्वों के दर्शन करते रहो। तुम्हारे पाँव तीव्र आँधी, पानी में भी स्थिर रहें। तुम्हारे हृदय में पवित्रता की गर्मी हो। शरीर में उत्साह हो। परमेश्वर का तेज अंग-प्रत्यंग से झलकता हो।

प्रत्येक नैष्ठिक साधक को गुरुवर के उक्त मार्गदर्शन के अनुसार अपनी इन्द्रियों, मन की तरंगों को, चित्त की प्रवृत्तियों को ईश्वरीय प्रयोजनों-अनुशासनों के अनुरूप ढालने की साधना करनी चाहिए। वसन्त पर्व के संदर्भ में अपनी अभी की स्थिति आँकते हुए अगले चरण के लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। यदि अपना सही आंकलन किया जाय, अपनी श्रद्धा के अनुरूप प्रगति के लक्ष्य सुनिश्चित किये जायें तो वासन्ती दिव्य ऊर्जा प्रवाह हमें वाञ्छित प्रगति के लिए पर्याप्त अनुदान अवश्य देगा।

ऊँचे लक्ष्य निश्चित करने में सांसारिक मोह, ममता, अहंता के आकर्षण हमारी राह में बाधक बनते हैं। वे हमें अपनी पहचान, अपने अस्तित्व के घटक लगने लगते हैं। किन्तु जब साधक ब्रह्मज्ञान के प्रकाश में आत्मबोध की ओर बढ़ता है तो वे अत्यंत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण लगने वाले घटक महत्त्वहीन लगने लगते हैं। गुरुवर ने लिखा है :-

- जैसे वायुयान में बैठकर आकाश में विहार से संसार की प्रत्येक वस्तु घर-बार, मनुष्य, पशु, वृक्षादि छोटे-छोटे प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार आत्मस्वरूप का प्रकाश करने वाले साधक को सांसारिक पदार्थ मिथ्या प्रतीत होते हैं। वह उससे बहुत ऊँचा उठ जाता है। माया-मोह के चक्र में नहीं फँसता। उसे दिव्य ज्ञान वह प्रकाश प्रदान करता है जिसकी रोशनी में उसे भव्यता, पवित्रता तथा वास्तविक सत्यता के दर्शन होते हैं।

युग निर्माण अभियान से जुड़े नैष्ठिक साधकों को वसन्त पर्व के कम से कम एक सप्ताह पहले से आत्मसमीक्षा करके आत्मकल्याण के अगले चरणों को सुनिश्चित करने के लिए गंभीर प्रयास करने चाहिए। पर्व के दिन सामूहिक साधना, यज्ञ, दीपयज्ञ में उन्हीं लक्ष्यों को निर्धारित अवधि में पाने के लिए संकल्पित होना चाहिए। संकल्पों के स्तर के अनुसार ही दिव्य अनुदान पाने की संभावना बनती है।''

### लोक कल्याण की दृष्टि से

आत्मकल्याण के लिए ज्ञानी जनों और शास्त्रों ने जहाँ भक्ति को आवश्यक कहा है, वही भक्ति का साधन 'सेवा' को बताया है। सूत्र है 'भज सेवायाम्।' भजन शब्द 'भज' धातु से बना है जिसका अर्थ सेवा होता है। ईश्वर की सेवा उसके विराट रूप, विश्व के हित-कल्याण के लिए प्रवृत्त होना ही है। युगऋषि ने लिखा है :-

ध्यान, जप, स्मरण-कीर्तन, व्रत, पूजन, अर्चन, वन्दन यह सब आध्यात्मिक व्यायाम हैं। इनके करने से आत्मा का बल और सतोगुण बढ़ता है। आत्मोन्नति के लिए इन सबका करना आवश्यक है और उपयोगी भी है। परन्तु इतना मात्र ही ईश्वर भजन या ईश्वर भक्ति नहीं। यह भजन का एक छोटा-सा अंश मात्र है। सच्ची ईश्वर सेवा उसकी इच्छा और आज्ञाओं को पूरा करने में है। उसकी फुलवारी को अधिक हरा-भरा, फला-फूला बनाने में है। अपने नियत कर्त्तव्य करते हुए अपनी और दूसरों की सात्विक उन्नति तथा सेवा में लगे रहना प्रभु को प्रसन्न करने का सर्वोत्तम उपाय हो सकता है।

लोकसेवा का सबसे श्रेष्ठ कार्य यही हो सकता है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीवन के तत्वज्ञान को, ब्रह्मज्ञान के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाया जाय और तद्नुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित किया जाय। यह कार्य वसंत पर्व पर प्रेरणाप्रद, आकर्षक सामूहिक समारोहों के माध्यम से किया जा सकता है। इसके लिए हफ्तों पहले से योजनाबद्ध प्रयास नैष्ठिक परिजनों को परस्पर सहयोगपूर्वक करने होंगे। यह आलेख पढ़ते ही क्षेत्रीय परिस्थितियों और परिजनों की क्षमता के अनुरूप योजना और व्यवस्था बनाने का पुरुषार्थ प्रारंभ करना होगा।

### वसन्त पर्व पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के विविध स्वरूप

वसंत पर्व आयोजन के अनेक प्रारूप बन सकते हैं। उन सबको मिला कर उसके दो प्रमुख वर्ग माने जा सकते हैं। 1. शक्तिपीठों-प्रज्ञा संस्थानों में सम्पन्न किए जाने वाले कार्यक्रम। 2. अन्य सामाजिक संगठनों और शिक्षण संस्थानों में किए जाने वाले कार्यक्रम।

**1. प्रज्ञा संस्थानों में :-** हर वर्ष वसंत पंचमी को माँ सरस्वती के अवतरण पर्व और युगऋषि के आध्यात्मिक जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। प्रातः सामूहिक जप, यज्ञ आदि क्रम स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार चलाये जाते हैं। इस बार पर्वायोजन को आत्मकल्याण और लोककल्याण की दृष्टि से अधिक व्यापक और प्रभावी बनाया जाना है। प्रस्तावित रूपरेखा इस प्रकार है।

- सभी साधकों को अपना साधनात्मक स्तर बढाने के लिए सूचित-प्रेरित किया जाय। साधकगण पर्व के एक सप्ताह पहले से ही गहन चिन्तन-आत्मसमीक्षा करके अपनी जीवन साधना के लिए उच्चतर लक्ष्य निर्धारित करें। तद्नुसार कुछ विशेष साधना-प्रार्थना का क्रम चलायें।
- प्रातःकाल निर्धारित स्थलों पर एक घंटे का सामूहिक जप एवं यज्ञादि का क्रम रखा जाय। उसमें सभी साधक अपने लक्ष्यों के अनुरूप संकल्पों को पूरा करने के लिए गुरुसत्ता-परमात्मसत्ता से प्रार्थना करें। पूर्णाहुति के पहले हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर आत्मोत्कर्ष के संकल्प लें, तब पूर्णाहुति करें।
- अंत में प्रसाद-अमृताशन जैसी व्यवस्थाएँ भी सुविधानुसार रखी जा सकती है।

**सायंकाल :-** वसंत पर्व की दिव्य प्रेरणाएँ, मनुष्य मात्र के लिये उज्जवल भविष्य लाने वाली युग निर्माण योजना के सूत्र जन-जन तक पहुँचाने के लिये विराट सभा जैसा स्वरूप दिया जाए। समय स्थानीय सुविधा के अनुसार नियत करें।

- उसमें अपने परिजनों के साथ ही विभिन्न प्रगतिशील संगठनों के प्रतिनिधियों, क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं भावनाशील नर-नारियों को शामिल होने के लिए आमंत्रित-प्रेरित किया जाए।
- मंच पर मशाल का एक बड़ा चित्र स्थापित किया जाए और उसके साथ माता सरस्वती का भी चित्र रखा जाए। सम्मानित आमंत्रित विशिष्ट व्यक्तियों के बैठने की अलग से सम्यक व्यवस्था बनायी जाए। पर्व पूजन के लिये कुछ विशिष्ट प्रतिनिधियों को पहले से तैयार किया जा सकता है।
- कार्यक्रम की कुल अवधि लगभग ढाई घण्टे रखी जाए। प्रारंभ में वातावरण और व्यवस्था बनाने के लिये कुछ भजन-कीर्तन करने का समय उसके अतिरिक्त रखा जा सकता है। प्रस्तावित क्रम इस प्रकार रखा जा सकता है।
- चयनित प्रतिनिधियों द्वारा दीप प्रज्वलन पुष्पांजलि, सरस्वती वंदना - 15 मिनट।
- भजनोपदेश शैली में युगऋषि के जीवन पर प्रकाश डालने और वसंत की प्रेरणा देने का क्रम अथवा मिशन के एवं आमंत्रित कुशल वक्ताओं द्वारा उक्त विषयों पर प्रेरक उद्बोधन- 45 मिनट।
- चयनित प्रतिनिधियों द्वारा पर्व पूजन- 30 मिनट।
- पर्व संकल्प को समझाते हुए संकल्प कराना, जयघोष-शांतिपाठ आदि- 15 मिनट।
- स्थानीय व्यवस्था के अनुसार विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करने, साहित्य भेंट देने के क्रम जोड़े जा सकते हैं।

**2. शिक्षण संस्थानों में :-** विभिन्न विद्यालयों में सरस्वती पूजन के नाम पर कार्यक्रम रखे जा सकते हैं। भारतीय संस्कृति ज्ञान परिक्षा के माध्यम से या सहज ही जिन शिक्षण संस्थानों के व्यवस्थापकों से संपर्क हो उन्हें इसके लिए प्रेरित किया जा सकता है। कार्यक्रम कुछ इस प्रकार रखे जा सकते हैं। (समय एक से डेढ़ घण्टा)

- दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना- 15 मिनट।
- मिशन के प्रतिनिधि द्वारा वसंत का संदेश एवं पर्व पूजन- 40 मि.
- बच्चों द्वारा प्रस्तुतियाँ (गायन-वादन-कविता आदि)-30 मि.
- अध्यक्षीय भाषण- 10 मिनट।

यदि हो सके तो पर्व के एक दिन पूर्व अथवा समारोह के पूर्व बच्चों की कुछ प्रतियोगिताएँ (कविता प्रस्तुति, गीत आदि) रखी जा सकती है। विजयी बच्चों द्वारा प्रस्तुति तथा उन्हें इनाम देने का क्रम समारोह में जोड़ा जा सकता है।

- शिक्षण संस्थानों में जो संस्कृति मण्डल चल रहे हों, उनके संचालकों को सम्मानित करने तथा नये मण्डल गठित-संचालित करने के प्रयास किये जायें।

आशा है कि परिजन योजनाबद्ध प्रयास करेंगे और वसन्त पर्व पर विद्या विस्तार की एक व्यापक लहर पैदा कर दिखायेंगे।

# गुजरात की धरती से उठी क्रांति की पुकार-चलो बदल दें राह समय की

## स्वजनों के प्रेम के वशीभूत अहमदाबाद पहुँचे आदरणीया जीजी-डॉ. साहब; गाँधी, पटेल, मोदी की क्रांतियों का स्वागत किया

आदरणीय डॉ. साहब एवं आदरणीया जीजी अहमदाबाद में आयोजित महिला एवं युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए

### एक लाख लोगों ने भाग लिया, 2100 दीक्षा संस्कार एवं 3200 पुसंवन संस्कार हुए

अहमदाबाद जिला गायत्री परिवार समन्वय समिति द्वारा 22 से 25 दिसम्बर की तारीखों में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं विराट संस्कार महोत्सव का आयोजन किया गया। यह आयोजन आयोजकों की अपेक्षाओं से कहीं ज्यादा सफल रहा। अपने स्वास्थ्य कारणों से क्षेत्रीय कार्यक्रमों में बहुत कम जाने वाली आदरणीया जीजी सहित आदरणीय डॉ. साहब और श्रीमती शेफाली पण्ड्या गुरुदेव-माताजी का संदेश एवं आशीर्वाद लेकर शांतिकुंज से इस कार्यक्रम में पहुँचे।

#### विशाल कलश यात्रा

पहले दिन 22 दिसम्बर को अहमदाबाद के चार मार्गों-गायत्री ज्ञान मंदिर ओढव, गायत्री प्रज्ञा मंदिर बापूनगर, शक्तिकुंज नरोडा तथा हीरावाड़ी-सरदार चौक से कलश यात्राएँ आरंभ हुईं। कुंजमोल पहुँचने के बाद सभी एकत्रित होकर आगे बढ़ीं। कलश और ज्वारे तथा पोथियाँ मस्तक पर धारण किये 2400 बहिनें, 350 चार पहिया-दो पहिया वाहन एवं कई प्रेरणादायी झाँकियाँ इसमें शामिल थे। यज्ञस्थल पर पहुँचने पर शांतिकुंज की टोली द्वारा भावविभोर कर देने वाले गीत-संदेश और आरती के साथ इसका स्वागत किया गया।

आदरणीय डॉ. साहब द्वारा 23 दिसम्बर को ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। 108 कुण्डीय यज्ञशाला में 428 दम्पतियों ने देवपूजन किया। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. साहब ने गायत्री मंत्र एवं गायत्री यज्ञ का महत्त्व विस्तार से बताया। उन्होंने गुरुदेव-माताजी एवं उनके मिशन की जानकारी भी दी।

#### महिला एवं युवा सम्मेलन

24 दिसम्बर की दोपहर को समग्र गुजरात की बहिनों एवं कार्यकर्त्ताओं का विराट सम्मेलन हुआ। इसमें लगभग 50,000 भाई-बहिनों ने भाग लिया। इस अवसर पर आदरणीया जीजी एवं डॉ. साहब ने गुजरात की भूमि को गौरवान्वित करने वाले महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, नरसी मेहता, बापा जलाराम और वर्तमान में परिवर्तन की साहसी पहल करने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को बड़ी श्रद्धा के साथ याद किया, अपने मिशन के विविध आन्दोलनों पर प्रकाश डाला। आदरणीया जीजी ने अपने संदेश का समापन करते हुए 'चलो बदल दें राह समय की...' आह्वान गुजरात के समर्पित, श्रद्धावान क्रांतिवीरों से किया।

#### शहीदों को समर्पित दीपयज्ञ

विराट सम्मेलन का समापन पर 24000 जलते दीपों के संग आयोजित दीपयज्ञ अत्यंत मनमोहक था। इसे देश के लिए शहीद हुए सैनिकों के नाम समर्पित किया गया, उनकी आत्मशांति के लिए प्रार्थना की गयी, आहुतियाँ दी गयीं। सभी उपस्थित लोगों को अपने बेटे-बहू, बेटी-दामाद को मिशन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित एवं सहमत कराते हुए युवा जोड़ो अभियान को गति देने के संकल्प दिलाये गये।

**कलश यात्रा** : जन-जन में देवत्व जगाने निकलीं अहमदाबाद की अनुशासित, श्रद्धासिक्त देवियाँ

### विशिष्ट झलकियाँ

- 1 लाख लोगों ने भाग लिया।
- अहमदाबाद जिले की सभी नौ तहसीलों के लोग शामिल हुए।
- 50 से अधिक स्कूलों के 2200 विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- कार्यकर्त्ता गोष्ठी में 7000 भाई-बहिनों ने वर्ष 2017 में अपनी सक्रियता के संकल्प लिये।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम में कन्या भ्रूणहत्या बंद हो, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पर्यावरण संरक्षण जैसे संदेश प्रमुखता से दिये गये। शक्तिपीठ संतरामपुर के भाई-बहिनों ने वनवासी नृत्य प्रस्तुत किया।
- पुंसवन संस्कार कराने वाली सभी बहिनों को निःशुल्क साहित्य सेट भेंट किया गया।
- 1000 से अधिक यज्ञोपवीत, मुण्डन, विद्यारंभ, अन्नप्राशन, जन्मदिवस आदि संस्कार हुए।
- परिवहन मंत्री श्री वल्लभ काकड़िया, गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. वल्लभ कथीरिया की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी।

### प्रमुख आकर्षण

- यज्ञ स्थल पर गुरुसत्ता के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' तथा देवात्मा हिमालय (बर्फ के बीच घी के शिवलिंग) एवं गुरुदेव-माताजी के जीवन दर्शन पर लगी प्रदर्शनी लोगों की आस्था का केन्द्र बने रहे।
- गुजरात के गौरव गीर नस्ल की गाय और गीर के सुप्रसिद्ध सिंह की मूर्तियाँ लगायी गयी थीं।
- व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी, गौ मंदिर, भ्रूण हत्या एवं बेटी बचाओ (वीडियो प्रदर्शन) के माध्यम से रचनात्मक आन्दोलनों का प्रभावशाली संदेश दिया गया।
- नेत्र एवं दंत चिकित्सा शिविर लगाकर विशेषज्ञों द्वारा लोगों का निःशुल्क उपचार किया गया।

### आद. जीजी का भव्य स्वागत

23 दिसम्बर की सायं आदरणीया जीजी अहमदाबाद पहुँचीं। हवाई अड्डे पर उनका स्वागत गुजरात के उपमुख्यमंत्री माननीय श्री नितिन पटेल ने किया। गायत्री परिवार के 150 कार्यकर्त्ता भाई-बहिन आदरणीया जीजी के स्वागत के लिए पहुँचे थे।

उप मुख्यमंत्री द्वारा आद.जीजी को माल्यार्पण

### गर्भोत्सव का विराट प्रयोग

इस कार्यक्रम में महिला जागृति सम्मेलन, युवा सम्मेलन के साथ 2400 बहिनों का पुंसवन संस्कार कराने का लक्ष्य रखा था। कार्यक्रम में 3200 बहिनों ने पुंसवन संस्कार कराया। दो मुस्लिम बहिनें भी संस्कार की वैज्ञानिकता को समझते हुए उत्तम संतति की प्राप्ति के इस विशिष्ट प्रयोग में शामिल हुईं। आदरणीया जीजी ने कहा भारत का उज्ज्वल भविष्य गढ़ने वाली नयी पीढ़ी के निर्माण में यह प्रयोग बड़ा प्रभावशाली सिद्ध होगा। इस प्रयोग से ऋषि संस्कृति को समृद्ध करने वाली देवात्माएँ धरती पर अवतरित हो सकेंगी।

पुंसवन संस्कार कराती बहिनें

### संकल्पित प्रयासों को मिला समर्पित सहयोग

यह कार्यक्रम दिसम्बर-15 में अंबाजी में शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधियों की मुख्य उपस्थिति में आयोजित गुजरात के संगठनात्मक सम्मेलन से उभरे संकल्प की परिणति थी। ईसनपुर, अहमदाबाद के कार्यकर्त्ता श्री वीरेन्द्र भावसार ने अहमदाबाद जिले की सभी शाखाओं को एक मशाल का स्वरूप देने का संकल्प लिया। वर्षभर के अथक प्रयासों से यह संकल्प 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं विराट संस्कार महोत्सव के रूप में साकार हुआ। सर्वश्री मीठाभाई पटेल, रमेशभाई जोषी, रमीलाबेन पटेल, राजूबेन ब्रह्मभट्ट, पंकज पटेल, वसंतभाई जोशी, चंद्रकांत ठक्कर एवं अहमदाबाद जिला गायत्री परिवार समन्वय समिति के सभी भाई-बहिनों एवं शाखा परिजनों ने तन, मन, धन से भरपूर सहयोग किया।

#### एक लाख साधकों द्वारा मंत्रलेखन

- पूरे जिले में मंत्र लेखन का बृहद् अभियान चलाया गया। एक लाख मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ और एक लाख 'ऋषि चिंतन के सान्निध्य में' जेबी पुस्तक निःशुल्क वितरित की गयीं।

#### 540 गाँवों में शक्तिकलश भ्रमण

- शांतिकुंज से लाये शक्ति कलश और रथ के साथ सभी 9 तहसीलों के 540 गाँवों का भ्रमण किया गया, संदेश तथा आमंत्रण दिया गया। दिवाली के बाद शक्ति कलश का भ्रमण अहमदाबाद शहर के हर मोहल्ले में किया गया।

सांस्कृतिक संध्या में बच्चों की प्रस्तुति

### गाँधी-पटेल की भूमि से होगी क्रांति

**आदरणीया डॉ.साहब**

- नारी सशक्तीकरण का अर्थ उसे अपनी शक्तियों का बोध कराना, उन्हें विकसित करने में सहयोगी बनना है। बहिनों ने आज हर क्षेत्र में अपनी क्षमताओं का परिचय दिया है, वह कमजोर नहीं है। नारी सशक्तीकरण आज के समय की सबसे बड़ी माँग है।
- सरकार सबकुछ नहीं कर सकती। जनता कर सकती है, युवाशक्ति कर सकती है। हमें सृजनात्मक मोर्चों पर अनेक क्रांतिकारी कदम उठाने होंगे। गाँधी-पटेल की इस भूमि से बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ होंगी। वर्ष 2026 परम वंदनीया माताजी का जन्म शताब्दी वर्ष है। तब तक के नौ वर्षों में हमें नवरात्रि के नौ दिनों के समान विशेष सक्रियता अपनानी है। युग परिवर्तन के इस विशिष्ट समय में से एक वर्ष का समय भगवान की नौकरी मानकर भगवान के कार्य के लिए निकालना चाहिए।

- सारसा के नित्यानंद भाई ने 50,00,000 पुस्तकें व्यसनमुक्ति की घर-घर पहुँचाईं। विवाहों में दहेज, प्रदर्शन, अपव्यय के विरुद्ध आन्दोलन की आवश्यकता है। हर कार्यकर्त्ता अपने जन्मदिन-विवाहदिन पर एक-एक पेड़ जरूर लगाये, तुलसी की पौध घर-घर पहुँचाये। पारिवारिक सम्मेलनों के माध्यम से युवाओं को जोड़ने का विशेष अभियान चलाया जाये।

### नारी ही नारी की दुश्मन क्यों है?

**आदरणीया शैल जीजी**

- आज नारी दो अतिवादों के बीच फँसी है। एक ओर नारी अशिक्षा, अंधविश्वास, मूढ़ मान्यताओं में जकड़ी है तो दूसरी ओर अपनी गरिमा को भूली नारी विज्ञापन की चीज देखाई देती है। परम वंदनीया माताजी ने नारी को इन दोनों ही अतिवादों से मुक्ति दिलाने के लिए महिला जागरण अभियान आरंभ किया था। हमारा लक्ष्य बहिनों में उनके सहज मातृत्वभाव को उभारना, उनकी भावसंवेदनाओं को जगाकर घर-परिवार और समाज में सुख-शांति की स्थापना करना है।
- आज बहिनों पर अनेक अत्याचार हो रहे हैं। पीड़ा तब होती है जब नारी ही नारी का दर्द समझ नहीं पाती। दहेज कम लाने की शिकायत, बेटे-बेटी में भेद, बहू के साथ अत्याचार महिलाएँ ही ज्यादा करती दिखाई देती हैं। गायत्री परिवार की बहिनों को इस सोच को बदलकर समाज को सही दिशा देनी होगी।
- हमें दहेज, दिखावा, फैशनपरस्ती विहीन समाज की रचना करनी होगी। इससे बचे लाखों-करोड़ों रुपये बेरोजगारों को रोजगार दे सकते हैं।
- हम नवरात्रि साधना में जिस देवी की पूजा करते हैं, दिवाली पर माँ लक्ष्मी से सम्पन्नता-खुशियाँ माँगते हैं, जब वह हमारे घर आना चाहती है तो उसे आने से पहले ही भगवान के घर के लिए विदा कर देते हैं, ऐसा क्यों?

**हर आत्मा अपने आप में दिव्य है। उसकी दिव्यता और विशेषताओं को उभारने की साधना करो। दूसरों के साथ अपनी तुलना करने पर ईर्ष्या या अहंकार उत्पन्न होता है।**

प्रज्ञा अभियान
16 जनवरी 2017

# युवा क्रांति वर्ष में संगठित प्रयासों से रचनात्मक आन्दोलनों को गति मिली

## रंग ला रहे हैं प्रबुद्ध युवाओं के संगठित प्रयास

### मई-2016 से हर रविवार को आयोजित होते हैं व्यसनमुक्ति शिविर

अलवर के नशामुक्ति शिविर का लाभ लेते नगरवासी

**अलवर (राजस्थान)**

नशा समाज को दुर्गति की ओर लेजाने वाली एक बड़ी समस्या है। गायत्री परिवार के कुछ प्रबुद्ध परिजनों ने युवा क्रांति वर्ष में इसके विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया और अच्छी सफलता प्राप्त की। मई-2016 से उन्होंने नगर में व्यसनमुक्ति कैम्प लगाने आरंभ किये, अब तक 30 से अधिक कैम्प वे लगा चुके हैं और 40 से 50 लोगों को पूरी तरह व्यसनमुक्त कर चुके हैं।

सर्वश्री चरण सिंह चौधरी, अमित कुमार वशिष्ठ- विश्वविद्यालय में व्याख्याता, सुशील झालानी आदि के नेतृत्व में चल रहे इस अभियान में कॉलेज ऑफ नर्सिंग हरेश हॉस्पिटल अलवर के प्राचार्य श्री मनोज शर्मा, एलोपैथिक चिकित्सक डॉ. सोमदत्त गुप्ता, केमिस्ट श्री विनय गुप्ता, मेडिकल कॉलेज में सहायक व्याख्याता डॉ. आदित्येन्द्र विजय

- **चिकित्सक, केमिस्ट, मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर दे रहे हैं नियमित सेवाएँ**
- **एक ही स्थान पर कई बार लगाये जाते हैं शिविर**
- **अब तक 40-50 लोगों को कर चुके हैं व्यसनमुक्त**

जैसे विशेषज्ञ सहयोग कर रहे हैं। ये सभी पिछले 8-10 वर्षों से ही मिशन से जुड़े हैं और मिशन के कार्यों में हर तरह से सहयोग करने के लिए उत्साहित हैं।

नशामुक्ति कैम्प सायंकाल 4 से 6 बजे तक के होते हैं। नगर के 5-6 जगहों पर ही ये कैम्प लगाये गये। एक ही स्थान पर कई बार आयोजित हुए, जिससे लोगों को बार-बार परामर्श और मनोबल बढ़ाने का अवसर मिला।

दो घंटे के कैम्प में आरंभ में मेगाफोन से पूरे क्षेत्र में प्रचार-प्रसार किया जाता है। फिर एकत्रित लोगों को वीडियो प्रोजेक्टर के माध्यम से समझाया जाता है। लोगों से व्यसन छोड़ने के संकल्प कराये जाते हैं और उसके उपाय भी बताये जाते हैं, होम्योपैथिक औषधियाँ दी जाती हैं। इन सबके सुंदर परिणाम उभरे, 40-50 लोग अब तक व्यसनमुक्त हो चुके हैं।

### अन्य अभियान

**वृक्षारोपण :** अलवर के इस 'दिया' समूह में अन्य क्षेत्रों में भी समाज निर्माण का उत्साह दिखाई देता है। उनके द्वारा प्रताप नगर और सोहम पब्लिक स्कूल दिवाकरी में बाल संस्कार शालाएँ चलायी जा रही हैं। उन्होंने मोती डूँगरी को गोद लेकर वहाँ पीपल के 300 पेड़ लगाये हैं। हर रविवार को उनकी सिंचाई और देखरेख के लिए वे जाया करते हैं।

**बंदी सुधार :** जिला जेल में बंदियों के विचारों को बदलने के प्रयास किये जा रहे हैं। गायत्री परिवार की प्रेरणा से लगभग 100 बंदी नियमित रूप से गायत्री उपासना, साधना, स्वाध्याय से जुड़ चुके हैं। साधना का प्रभाव भी उनके व्यक्तित्व और विचारों में झलकता है। साधना के प्रभाव से सजाएँ कम होने और घर-परिवार की समस्याओं का समाधान होने जैसे समाचारों से वे ही नहीं, कारागार के अन्य बंदी भी साधना-स्वाध्याय के लिए प्रेरित होते हैं।

## गुजरात के प्रांतीय संगठन के प्रशंसनीय प्रयास

गुजरात प्रांत के संगठित प्रयासों ने युवा क्रांति वर्ष को उद्देश्यपूर्ण बनाने में शानदार सफलता मिली। अनेक आन्दोलनों को गति देने में प्रभावशाली प्रशिक्षण, श्रमशक्ति के सुनियोजन के परिणाम स्पष्ट दिखाई दिये। प्रस्तुत हैं प्रांतीय स्तर पर चलाये गये व्यसनमुक्ति और बाल संस्कार शाला आन्दोलनों की बानगियाँ।

**व्यसनमुक्ति आन्दोलन**

- 458 कार्यक्रम स्कूल, कॉलेज, आईटीआई जैसे शिक्षण संस्थानों में आयोजित हुए। 130 गाँवों में कार्यक्रम आयोजित किये गये। इनमें वीडियो प्रेज़ेंटेशन के साथ व्यसनों के दुष्प्रभाव लोगों को बताये गये, उन्हें छोड़ने के संकल्प जगाये गये। कार्यक्रमों के अंतर्गत रैलियाँ निकाली गयीं और प्रदर्शनियाँ लगायी गयीं।
- 426 कार्यक्रम तंबाकू निषेध दिवस पर आयोजित हुए। इनमें रैलियाँ, प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनचेतना जगाई गयी।
- 2,50,000 से अधिक लोगों तक व्यसनमुक्ति का संदेश पहुँचाया जा सका। उन्हें व्यसनमुक्ति पुस्तिकाएँ निःशुल्क प्रदान की गयीं।
- 4500 वीडियो सीडी-डीवीडी वितरित की गयीं।
- 12 लाख रुपये की दवाइयाँ निःशुल्क बाँटी गयीं।

**प्रशिक्षण शिविर श्रृंखला**

- सुरेन्द्रनगर, राजकोट, अरवल्ली और साबरकाँठा जिलों में प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इनमें प्रशिक्षित सैकड़ों कार्यकर्त्ता अपने-अपने क्षेत्र में प्रभावशाली ढंग से अभियान को गति दे रहे हैं।

भरूच : नशामुक्ति आन्दोलन का प्रशिक्षण देते श्री गिरीश पटेल

अगले चरण में गुजरात के हर जिले में ऐसे प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाने की योजना है। प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं को वीडियो प्रेज़ेंटेशन, वीडियो क्लिप्स, फोटोग्राफ एवं अन्य प्रचार सामग्री से सुसज्जित किया जा रहा है। श्री किरीट सोनी (मोडासा) एवं श्री गिरीश पटेल (अहमदाबाद) सर्वश्री वेराभाई पटेल(गाँधीनगर), दिनेश ठक्कर(कच्छ), प्रदीप ऋषि(खेड़ब्रह्मा), जिज्ञेश पटेल(वडाली), शैलेष भट्ट(कच्छ), गुलाबसिंह (सुरेन्द्रनगर) तथा सुजलभाई(राजकोट) के सहयोग से प्रांतीय व्यसनमुक्ति अभियान को निरंतर गति प्रदान कर रहे हैं।

### गुजरात में चल रही हैं 1000 से अधिक बाल संस्कार शालाएँ, 2500 कार्यकर्त्ता प्रशिक्षित

कपड़वंज में कार्यकर्त्ताओं को बाल संस्कार शाला संचालन का प्रशिक्षण देते प्रवीण पंचाल

युवा क्रांति वर्ष के पूर्वार्ध में बाल संस्कार शाला आन्दोलन को भी पूरे गुजरात में शानदार गति मिली। अनुभवी प्रांतीय प्रशिक्षक श्री प्रवीणभाई पंचाल (महेसाणा) और श्री जयंतीभाई ओझा द्वारा अधिकांश जिलों में बाल संस्कार शाला प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। अब तक लगाये गये 27 शिविरों में 2500 से ज्यादा कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं द्वारा पूरे प्रदेश में एक हजार से अधिक बाल संस्कार शालाएँ इन दिनों नियमित रूप से चलायी जा रही हैं।

श्री प्रवीण पंचाल के अनुसार प्रदेश में बाल संस्कार शालाओं के संचालन में एकरूपता लाने, संचालकों का उत्साहवर्धन करने और नयी-नयी शिक्षण सामग्रियाँ उपलब्ध कराने के लिए केन्द्रीय टोली निरंतर प्रयत्नशील रहती है। इस वर्ष सभी बाल संस्कार शालाओं की निगरानी रखी जाने और उनकी गुणवत्ता बढ़ाने के प्रयास करते रहने की योजना बनायी गयी है। इसके लिए संचालकों एवं प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं को बाल संस्कार शाला संदर्शिका, पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन एवं अन्य आवश्यक-उपयोगी सामग्री प्रांतीय प्रतिनिधियों द्वारा पहुँचायी जा रही है।

गुजरात में बाल संस्कार शालाओं का तंत्र स्थापित करने में युवा प्रकोष्ठ शांतिकुंज के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के विशेषज्ञ कार्यकर्त्ता श्री के.के. विनोद का अग्रणी योगदान रहा है। सर्वश्री महेशभाई पण्ड्या-वडोदरा, संगीताबेन जोशी-कच्छ, रमेशभाई जोशी-अहमदाबाद, सोमभाई बारोट-मोडासा, मधुभाई सोनी-पाटन तथा महेसाणा के कनुभाई, राजीव त्रिवेदी, दिलीप पटेल और अरविंद सुथार अभियान को शानदार गति दी जा रही है।

## मात्र 1000 रुपये में हो गयी शादी

**दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)**

परम पूज्य गुरुदेव ने नारा दिया 'सज्जनता के दो आधार, सादा जीवन उच्च विचार'। गायत्री परिवार के परिजनों ने इसे अपनाया भी और जन-जन को इसे अपनाने के लिए प्रेरित भी किया। अधिकांश मामलों में लोग परम्पराओं की दुहाई देते, लोकलाज के आगे नतमस्तक होते ढर्रे का जीवन छोड़ने को तैयार नहीं होते। लेकिन हमें समझ लेना चाहिए कि परम पूज्य गुरुदेव ने जो कहा है, वही समय की माँग है। अच्छा है साहस करें-समझदारी अपनायें और परम्पराओं को बदलते हुए श्रेयाधिकारी बनें, अन्यथा परिस्थितियाँ हमें बदल ही देंगी।

गायत्री मंदिर दंतेवाड़ा में दंतेवाड़ा की सहायक आरक्षक गीता बिहारी का विवाह हैदराबाद में नर्सिंग की पढ़ाई कर रहे जगदलपुर निवासी अमित ध्रुव से मात्र एक हजार रुपये के खर्च में हो गया। दोनों अपना विवाह धूमधाम से करना चाहते थे, लेकिन नोटबंदी से धन की किल्लत के कारण वे ऐसा कर नहीं सके। विवाह हुआ मात्र ₹ 2 की जयमाला, ₹ 51 का प्रसाद, ₹151 पंडित जी की दक्षिणा और लगभग ₹ 500 के अतिथियों के जलपान के साथ उनका विवाह सम्पन्न हो गया।

गीता और अमित दोनों पर अपने-अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ हैं। अब सादगीपूर्वक हुए विवाह की बचत से अमित अपने माँ के दिल की बीमारी के इलाज और गीता अपने भाई-बहिनों की परवरिश में सहयोग कर सकेंगे।

**परिस्थितियों का क्यों करें इंतजार, विवेक अपनायें, कहलायें समझदार।**

सामान्य परिस्थिति में ऐसे सादगीपूर्ण विवाह की गीता और अमित कल्पना भी नहीं कर सकते थे, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें एक अच्छा सबक सिखा दिया। इन घटनाओं से समाज को सबक लेना चाहिए और जीवन-आदर्शों को अपनाने-परम्पराओं को बदलने की पहल करनी ही चाहिए।

## जरूरतमंदों को गरम कपड़े बाँटे

**गिरिडीह (झारखंड)**

अखिल विश्व गायत्री परिवार गिरिडीह ने सर्दी के दिनों में ठंड से ठिठुरते लोगों को सहारा देते हुए गरम कपड़े और कंबल वितरित किये। प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री कामेश्वर प्रसाद सिंह के अनुसार 26 दिसम्बर को बिराजपुर के प्राथमिक विद्यालय में कपड़े वितरण का कार्यक्रम रखा गया था। इसमें 125 लोगों को गरम कपड़े और कम्बल वितरित किये गये। इसके बाद चचघरा में भी गायत्री परिवार की ओर से गरम कपड़ों के वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री सिंह ने इन गाँवों को नशामुक्त करने तथा

गाँववासियों को उत्तम किस्म की जैविक खेती का प्रशिक्षण देने का आश्वासन भी दिया।

## युग निर्माणी बने 26वीं उ.प्र. मास्टर एथलेटिक के विजेता

**झाँसी (उत्तर प्रदेश)**

17 एवं 18 दिसम्बर को बनारस के उदय प्रताप इंटर कॉलेज में आयोजित एथलेटिक प्रतियोगिता में बुंदेलखंड के धावकों का दबदबा रहा। 75 वर्ष से ऊपर के वर्ग में श्री बलराम वानप्रस्थी 100 एवं 800 मीटर की प्रतियोगिता में प्रथम रहे। श्री हरिशंकर पटेल 65 वर्ष से अधिक के वर्ग में 100, 200 एवं 400 मीटर की प्रतियोगिता में प्रथम रहे। नीलू मिश्रा ने 40 वर्ष से अधिक के वर्ग में 100, 200 एवं 400 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान पाया, जबकि श्री सत्यनारायण सिंह ने 96 वर्ष से अधिक वर्ग में 100 मीटर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि ये वो विजेता हैं जिनके हौसलों की उड़ान में गुरुदेव के विचार और गायत्री साधना का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

श्री बलराम वानप्रस्थी मिशन के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं, पूरे बुंदेलखंड में 'वानप्रस्थी' के नाम से जाने जाते हैं। उनका चयन फरवरी में हैदराबाद में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हुआ है।

उत्तर प्रदेश सरकार में उच्चाधिकारी सुश्री नीलू मिश्रा ने भारत में कई कीर्तिमान स्थापित किये, वे एशियाड में भी प्रथम रहीं थीं। श्री सत्यनारायण सिंह ने एशियाड में भाग लेने का संकल्प ले रखा है।

20 दिसम्बर को झाँसी के करगिल पार्क में श्री बलराम वानप्रस्थी का गायत्री परिवार की ओर से सार्वजनिक सम्मान किया गया। श्री हरिराम राय ने उनका तिलक-माल्यार्पण कर व श्री वीजी श्रीवास्तव ने शॉल उढ़ाकर उनका अभिनंदन किया।

**हौसलों की उड़ान**

बायें से - श्री दीनदयाल मिश्रा, नीलू मिश्रा, सत्यनारायण सिंह, हरिशंकर पटेल एवं बलराम वानप्रस्थी

# गायत्री शक्तिपीठ माणसा द्वारा विशाल शिक्षा संकुल का निर्माण

## आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा संकुल का लोकार्पण, दानदाताओं का सम्मान

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी शिक्षा संकुल का लोकार्पण करते हुए

**वेदमाता गायत्री एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित**
- 12.5 बीघा जमीन • 66 बड़े-बड़े कमरे
- आध्यात्मिक वातावरण
- तीन बीघा में मनोरम उद्यान
- **चार स्कूल :** **1.** वी.डी. माहेश्वरी इण्टरनेशनल स्कूल (सीबीएसई मान्यता प्राप्त), **2.** चंद्रिकाबेन कल्पेशभाई पटेल देव संस्कृति विद्यालय (गुजराती माध्यम-कक्षा 1 से 8), **3.** शकरी बेन कांतिभाई पटेल प्री प्राइमरी स्कूल (सीबीएसई मान्यता प्राप्त) तथा **4.** डाह्यीबेन रणछोड़भाई पटेल प्री प्राइमरी स्कूल (गुजराती माध्यम)

**माणसा, गाँधीनगर (गुजरात)**
गायत्री शक्तिपीठ माणसा द्वारा शिक्षा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल हुई। मिशन को अनन्य भाव से समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने पहल की, नैष्ठिक प्रयासों को शानदार जनसहयोग मिला, परिणाम स्वरूप माणसा में एक विशाल शिक्षा संकुल बनकर तैयार हो गया है। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 23 दिसम्बर को इस शिक्षा संकुल का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने समस्त दानदाताओं को सम्मानित भी किया।

आदरणीय डॉ. साहब ने शक्तिपीठ के ट्रस्टियों, शिक्षा संकुल के संचालकों और 6 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन करते हुए शिक्षा संकुल का लोकार्पण किया। शक्तिपीठ माणसा के प्रबंधन ट्रस्टी श्री पुंजाराम जी, अन्य अतिथि तथा दानदाता भी दीप प्रज्वलन-संकुल के लोकार्पण में सहयोगी बने। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. साहब ने उपस्थित विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए शिक्षा क्रांति के माध्यम से संस्कारवान समाजनिष्ठ पीढ़ी के निर्माण के नैतिक दायित्वों पर खरे उतरने का आह्वान किया। उन्होंने त्याग की भावना और बेहतर समन्वय के आधार पर इस संकुल के विश्वविद्यालय तक के रूप में विकसित होने की शुभकामनाएँ भी प्रदान कीं।

इससे पूर्व संस्था के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री अंबालाल एन. पटेल एवं प्रमुख दानदाताओं ने आदरणीय डॉ. साहब का भावभरा स्वागत किया। उन्होंने बताया कि गायत्री परिवार के प्रयासों से यह पूरे क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यम का सबसे बड़ा शिक्षा संकुल बनने जा रहा है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा नीति के अनुरूप संस्कारवान, सेवाभावी, समाजनिष्ठ पीढ़ी राष्ट्र को समर्पित करना हमारा मुख्य ध्येय है। यहाँ नाममात्र की फीस पर विद्यार्थियों को शिक्षा दी जायेगी।

सचिव श्री कल्पेशभाई पटेल ने शिक्षा संकुल के प्रारूप की जानकारी दी। कार्यक्रम का समापन शक्तिपीठ के ट्रस्टी डॉ. भिखुभाई पटेल द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ।

# युग साहित्य के हैंगर लगाने का बृहद् अभियान

**1500 हैंगर आणंद और पास के शहरों में लगवाये गये**
**200 हैंगर अमेरिका में भी लगवाये गये हैं**







आणंद में साहित्य हैंगर स्थापना के लिए दो टोलियाँ काम कर रही हैं। एक टोली जनसंपर्क कर नये स्थानों पर उन्हें स्थापित कराती है और दूसरी टोली जहाँ पहले से हैंगर टँगे हैं, उनमें खाली हुए स्थानों पर साहित्य भरने का काम करती है।

**आणंद (गुजरात)**
श्री अजय गुप्ता पुणे महाराष्ट्र से आणंद पहुँचे। क्षेत्र नया था, लेकिन मन में मिशन के लिए कुछ करने का उत्साह था। उन्होंने वहाँ के हॉस्पिटल के प्रतीक्षलय, स्वागत कक्ष, पुस्तकालय, बस स्टैण्ड, रेस्टोरेण्ट आदि से संपर्क किया, उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य के हैंगर लगाने के लिए सहमत किया।

बात आम के आम, गुठलियों के दाम जैसी थी। नेक पहल को सहयोग भी भरपूर मिला। बड़ी संख्या में समझदारों ने सहज ही परोपकार के इस अवसर का स्वागत किया और साहित्य हैंगर लगवाये। स्थानीय नैष्ठिक कार्यकर्त्ता भी उनसे जुड़ते गये और जगह-जगह जनसंपर्क कर सार्वजनिक स्थानों पर हैंगर लगवाने के अभियान में जुट गये। अमेरिका तक के कार्यकर्त्ता विचार क्रांति के इस अभियान से प्रभावित हुए, सहयोगी बने। परिणाम स्वरूप आणंद और आसपास के जिलों में अब तक ऐसे 1500 साहित्य हैंगर और अमेरिका में 200 साहित्य हैंगर विविध स्थानों पर लगाये जा चुके हैं।

अहमदाबाद के श्रीमती निशा और श्री प्रकाश भट्ट इसमें विशेष रुचि ले रहे हैं। उन्होंने अस्पतालों में हैंगर लगवाना आरंभ किया है। अब तक वे संजीवनी मल्टी स्पेश्यालिटी डेण्टल क्लीनिक सेटेलाइट, शुभम वीमेन्स हॉस्पिटल सेटेलाइट, वेदांत मल्टी स्पेश्यालिटी हॉस्पिटल नरोडा, विपुल चिल्ड्रन हॉस्पिटल नरोडा, श्रद्धा चिल्ड्रन हॉस्पिटल नरोडा, प्रमुख मल्टी स्पेश्यालिटी हॉस्पिटल, कश्वि वीमेन्स हॉस्पिटल एण्ड प्रसूति गृह नरोडा में कई साहित्य हैंगर लगवा चुके हैं।

# राजस्थान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा (महाविद्यालय) का राज्य स्तरीय प्रभावशाली प्रयोग

## 110 महाविद्यालयों के 6000 विद्यार्थियों ने भाग लिया

- **परीक्षा के तीन चरण कॉलेज, जिला एवं प्रांत**
- **लिखित, व्याख्यान एवं कई प्रयोगात्मक कार्य दिये गये**
- **कोटा में आयोजित हुई प्रांत स्तरीय प्रतियोगिता**
- **श्रीगंगानगर, कोटा और राजसमंद जिले क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे**

**कोटा (राजस्थान) :** दिया, राजस्थान के प्रांतीय संगठन ने वर्ष 2016 में प्रांत के सभी जिलों के महाविद्यालयों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया। तीन चरणों में परीक्षा हुई, 110 महाविद्यालयों के 6000 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया, जिनमें आईआईटी, एम्स व राज्य की कई प्रतिष्ठित संस्थाओं के विद्यार्थी शामिल हुए। वस्तुतः यह परीक्षा एक प्रतियोगिता थी, जिसने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के आदर्शों के संदर्भ में चिंतन-मनन करने और महाविद्यालयों में प्रगतिशील कार्यक्रमों को आरंभ करने के लिए प्रेरित किया।

प्रतियोगिता का तीसरा और अंतिम चरण गायत्री शक्तिपीठ कोटा में 11 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। इसमें जिला स्तर पर वरीयता प्राप्त 22 जिलों के दो-दो चयनित विद्यार्थियों की टोली ने भाग लिया। प्रांतीय प्रतियोगिता में वे जिला स्तर पर हुई प्रतियोगिता में 'जिम्मेदार विद्यार्थी' विषय पर परियोजना लेकर आये थे, उन्हें इसे अपने महाविद्यालय में प्रायोगिक तौर पर आरंभ करने का कार्य सौंपा गया था। उन्हें पूर्व में ही एक विशिष्ट महापुरुष के जीवन चरित्र संबंधी तैयारी करके आने के लिए भी कहा गया था। लिखित परीक्षा, आशु भाषण, रैपिड फायर, गुरुदेव के प्रवचन पर आधारित बजर राउण्ड जैसे कई कार्यक्रम परीक्षा में शामिल किये गये।

श्रीगंगानगर ने प्रथम, कोटा ने द्वितीय और राजसमंद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कोटा के माननीय सांसद श्री ओम बिड़ला के मुख्य आतिथ्य और शांतिकुंज में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रभारी श्री प्रदीप दीक्षित की मुख्य उपस्थिति में पुरस्कार वितरण और सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। प्रांत स्तर पर विजेताओं के साथ जिला स्तर पर विजेता रही प्रत्येक टीम को स्मृति चिह्न, साहित्य व सद्वाक्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

श्री ओम बिड़ला ने इस परीक्षा को युवाओं के विचारों में सृजनात्मकता का विकास करने वाला बताया और 'दिया' द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। श्री प्रदीप दीक्षित ने परीक्षा के प्रारूप तथा उसे रोचक, उद्देश्यपूर्ण व प्रभावशाली बनाने के लिए राजस्थान के युवाओं द्वारा किये गये प्रयासों की प्रशंसा की, कहा कि इसे पूरे देश में लागू किया जाना चाहिए। गायत्री परिवार के प्रांतीय समन्वयक श्री घनश्याम पालीवाल एवं शक्तिपीठ कार्यवाहक श्री जीडी पटेल ने अतिथियों को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

त्रिस्तरीय परीक्षा के संचालन में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा (महाविद्यालय) राजस्थान की शिक्षा समिति के सदस्य सर्वश्री रमेश छंगाणी, प्रज्ञेश यादव, प्रणय त्रिपाठी, ललित शर्मा, धर्मेश कुमार के साथ प्रो. विवेक विजय आदि की मुख्य भूमिका थी। कोटा में आयोजित परीक्षा की व्यवस्था में प्रज्ञेश यादव, विशाल नैनीवाल, मुकेश कुमार, लोकेश कुमार, ललित सोनी का प्रमुख योगदान रहा। इस अवसर पर दिया, राजस्थान के प्रतिनिधि श्री भक्तभूषण वर्मा, डॉ. वेदप्रकाश चौधरी, महेन्द्र शर्मा, रमेश असावा, शिवसुत राव, मनीषा छंगाणी, श्याम सुंदर आदि उपस्थित थे।

# गुरभक्ति और आदर्श निष्ठा का चमत्कार

**तेरा तुझको अर्पण का भाव उमड़ता रहा गुरुसत्ता का अनुदान बरसता रहा**

**हिण्डौन, करौली (राजस्थान)**
महूखास, तहसील हिण्डौन के निवासी श्री वेदप्रकाश बंसल ने सन् 2000 में शांतिकुंज में नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र किया। गुरुदेव की प्रेरणा से वे आदर्शनिष्ठ जीवन जीने के लिए प्रेरित हुए। महूखास में उनकी कपड़े की एक छोटी-सी दुकान थी। उन्होंने 'एक दाम' के सिद्धांत पर चलने का निर्णय लिया।

प्रामाणिकता बढ़ी, व्यवहार भी बदला तो गुरुकृपा भी खूब बरसी। छोटी-सी दुकान से ही खूब आय होने लगी। व्यापार बढ़ा, लेकिन गुरुनिष्ठा और समाज सेवा का भाव वही रहा। वे गुरुकृपा की कमाई को गुरुकार्यों में लगाने में कभी पीछे नहीं रहे।

बड़ा बेटा छः वर्ष पहले एमबीबीएस हो गया था, अब एम.डी. हो गया है। कुम्हेर के वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र श्री श्यामसुंदर शर्मा ने बताया कि श्री वेदप्रकाश बंसल ने इस उपलक्ष्य में 5 ज्ञानरथ हिण्डौन, नदबई, दौसा व अलवर शक्तिपीठों को उपलब्ध कराये हैं। प्रत्येक ज्ञानरथ की कीमत 6 से 7 लाख रुपये है।

श्री वेदप्रकाश बंसल को 7 दिसम्बर को एक और आनन्ददायक सफलता मिली। उनका छोटा बेटा विवेक राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आर.ए.एस.) में चयनित हो गया।

# प्रथम पुस्तक मेले को मिली शानदार सफलता

**सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)**
23 नवंबर से 27 नवंबर तक सहारनपुर में पुस्तक मेले का आयोजन संपन्न हुआ। सहारनपुर में आयोजित गायत्री परिवार का यह पहला ही पुस्तक मेला था। समाज पर नोटबंदी का भी जबरदस्त प्रभाव था। इसके बावजूद पुस्तक मेले को शानदार सफलता मिली, 1 लाख से अधिक रुपयों का साहित्य बिका।

मेले में बड़ी संख्या में बुद्धिजीवियों व पुस्तक प्रेमियों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन सहारनपुर नगर विधायक श्री राजीव गुम्बर ने किया, पूर्व विधायक श्री सुरेन्द्र कपिल मुख्य अतिथि थे। पूर्व मंत्री श्री संजय गर्ग विधायक प्रदीप चौधरी, फादर डेनियल मसीह इत्यादि ने इस प्रयास को एक सराहनीय कदम बताया।

# दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

**श्री अर्जुन दादा : कुक्षी, धार (मध्य प्रदेश)**

गायत्री परिवार के वरिष्ठ मार्गदर्शक 93 वर्षीय प्रज्ञापुत्र श्री अर्जुन दादा का 5 दिसम्बर को देहावसान हो गया। उनकी मानवतावादी सेवाओं को गायत्री परिवार ही नहीं, क्षेत्र के लाखों लोग बड़ी श्रद्धापूर्वक याद करते रहेंगे।

**श्री ब्रजनंदन प्रसाद विद्यावाचस्पति, मुंगेर (बिहार)**

बिहार में गायत्री परिवार की नींव के पत्थर माने जाने वाले श्री ब्रजनंदन प्रसाद विद्यावाचस्पति का 83 वर्ष की अवस्था में 18 दिसम्बर को निधन हो गया। प.पू. गुरुदेव के आह्वान पर 1958 में मथुरा में आयोजित नरमेध यज्ञ में भी उन्होंने भाग लिया था।

**श्रीमती राजेश्वरी शर्मा, मेरठ (उत्तर प्रदेश)**

गायत्री शक्तिपीठ की संस्थापक सदस्या एवं व्यवस्थापिका श्रीमती राजेश्वरी शर्मा का 76 वर्ष की उम्र में दिनांक 8 नवम्बर को देहावसान हो गया। उनके संकल्प के अनुरूप उनके पुत्र संजय व अजय ने उनकी आँखें मेडिकल कॉलेज को दान कर दीं।

# इटली के योग धर्म आश्रम, ब्रक्सीआनो द्वारा संचालित होंगी गायत्री परिवार की गतिविधियाँ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने इटली के ब्रक्सीआनो शहर स्थित योग धर्म आश्रम में 17 दिसम्बर को विशेष योग प्रशिक्षण दिया। इसमें 13 स्नातकों को भारतीय योग का शिक्षण दिया गया। आश्रम संचालक एवं प्रशिक्षु डॉ. चिन्मय जी के विचार और शिक्षण से अत्यंत प्रभावित हुए। उनका हृदय से आभार व्यक्त करते हुए आश्रम संचालक भाई हरिसिंह खालसा ने अपने आश्रम को अखिल विश्व गायत्री परिवार के केन्द्र के रूप में स्थापित करने और गायत्री परिवार के विचार व रचनात्मक कार्यों का प्रचार-प्रसार करने का निर्णय लिया है।

भाई हरिसिंह खालसा पूर्व से ही परम पूज्य गुरुदेव के विचारों और गायत्री परिवार की गतिविधियों से बहुत प्रभावित हैं। वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित योग, संस्कृति, अध्यात्म सम्मेलनों में कई बार भाग ले चुके हैं। भारतीय संस्कृति के विस्तार के लिए आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से मिले सूत्रों को अपने आश्रम के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करते रहे हैं। डॉ. चिन्मय जी की उनके आश्रम में उपस्थिति ने आश्रम की सक्रियता को नयी दिशाएँ दीं। समन्वय-सहयोग का यह क्रम अब तेजी से आगे बढ़ेगा।

योग धर्म आश्रम में योग प्रशिक्षण का नियमित क्रम चलता है। वे अब तक 120 शिक्षक तैयार कर चुके हैं जो विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से योग विद्या का प्रचार कर रहे हैं। योग और भारतीय संस्कृति के विस्तार में आश्रम की एक अन्य संस्थापिका बीबी गुरु इन्द्रकौर भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।



डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति में योगधर्म आश्रम के संचालक एवं प्रशिक्षु

# बुंदेलखंड में आयोजित हुए युवा जागृति सम्मेलन

## देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति ने बतायी जीने की सही राह

युवा क्रांति वर्ष के उपलक्ष्य में 12 एवं 13 नवम्बर को बुंदेलखंड की धरती पर कई महत्त्वपूर्ण सम्मेलन हुए। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इन्हें सम्बोधित किया। उन्होंने हीन भावना, दुश्चिंतन, दुष्प्रवृत्तियों, भटकावों में फँसी युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भर बनकर गौरवशाली जीवन जीने के बहुमूल्य सूत्र दिये। उन्होंने कहा कि सारी समस्याओं का एकमात्र कारण आत्मशक्ति का अभाव है। इसके लिए युवाओं को पाश्चात्य संस्कृति के आकर्षणों से उठकर अध्यात्म मार्ग पर चलना चाहिए। अच्छे साहित्य का स्वाध्याय उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लायेगा। उन्होंने युवाओं को नशे से बचने के लिए प्रभावशाली संदेश दिया।

### संभागीय युवा सम्मेलन

मुख्य कार्यक्रम 13 नवम्बर को शुभाशीर्वाद गार्डन, झाँसी में विधायक श्री दीप नारायण सिंह की मुख्य उपस्थिति में हुआ। बुंदेलखंड के सभी जिलों के 2500 युवाओं ने इसमें भाग लिया। लक्ष्मी व्यायामशाला की बालिकाओं ने संयुक्त मुद्राओं, मल्लखम्भ की विभिन्न मुद्राओं एवं आसनों का आकर्षक प्रदर्शन किया। पं. कृष्णचंद्र शर्मा इ.कॉलेज की छात्राओं ने महिला सशक्तीकरण पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। डॉ. चिन्मय जी ने सभी बालिकाओं का व्यक्तिगत रूप से उत्साहवर्धन किया।

### बीएचईएल, झाँसी में

12 नवम्बर को डॉ. चिन्मय जी ने बीएचईएल झाँसी में लगभग 1000 अधिकारी, अभियंताओं को 'मानव उत्कर्ष एवं तनाव प्रबंधन' विषय पर संबोधित किया। समूह महाप्रबंधक श्री दीक्षित, महाप्रबंधक श्री सुभाष सक्सेना, श्री तरुण निगम एवं कई उच्च अधिकारियों ने उनके विचारों से प्रेरणा ग्रहण की।

### महारानी मेडिकल कॉलेज में

13 नवम्बर को प्रातः महारानी मेडिकल कॉलेज झाँसी के सभागार में प्राचार्य डॉ. एनएस सेंगर एवं बुंदेलखंड प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. मनोज गुप्ता के संग एमबीबीएस के 500 विद्यार्थियों को डॉ. चिन्मय जी ने युग संदेश दिया।

इन तीनों कार्यक्रमों का संयोजन गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री राजेन्द्र द्विवेदी, हरिकृष्ण पुरोहित एवं उनके साथियों ने किया।

# उत्तर प्रदेश के 15 जिलों की वित्तीय अनुशासन गोष्ठी

**लखनऊ (उत्तर प्रदेश)**

शांतिकुंज द्वारा गोमती नगर पर्वतीय महापरिषद के कार्यालय में वित्तीय अनुशासन संबंधी विशेष गोष्ठी आयोजित की गयी। इसमें 15 जिलों के सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं ट्रस्टियों ने भाग लिया। इसे विधि एवं वित्त विभाग, शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री राम सहाय शुक्ला ने मुख्य रूप से संबोधित किया। उन्होंने वर्तमान परिवेश में भारत सरकार द्वारा निर्धारित वित्तीय अनुशासनों की जानकारी दी। इसके साथ ही गोमती नगर गायत्री शक्तिपीठ को मॉडल शक्तिपीठ के रूप मे विकसित करने की योजना पर भी चर्चा हुई।

शांतिकुंज से आये अन्य प्रतिनिधियों ने भी विविध विषयों पर गोष्ठी को संबोधित किया। श्री योगेश शर्मा ने संगठन के अनुशासनों की जानकारी दी। श्री दया शंकर शर्मा जी ने ट्रस्टियों को ट्रस्ट की कार्यपद्धति को सुचारु ढंग से चलाने के सूत्र बताये। स्थानीय जोन प्रभारी श्री अरविन्द निगम ने योजनाबद्ध प्रयासों से संगठित होकर मिशन की गतिविधियों का विस्तार करने के संदर्भ में मार्गदर्शन दिया। बैठक में श्री एसके श्रीवास्तव, एसपी अवस्थी, श्री सुरेन्द्र सिंह, श्री अमरनाथ दुबे, श्री देशबंधु तिवारी, श्री अनिल तिवारी, श्री केपी सिंह आदि वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के साथ लगभग 500 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# युवा चेतना शिविर

## ग्रामोत्थान के संकल्प उभरे

**चापोर, मुलताई (म.प्र.)**

मुलताई शाखा के सहयोग से ग्राम चापोरा में एक दिवसीय युवा चेतना-प्रज्ञायोग प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। गाँव के 200 युवाओं ने इसमें भाग लिया। पं. जीतेन्द्र शुक्ल, श्री अनिल आचार्य आदि ने उनका मार्गदर्शन किया। चापोरा में सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाया गया। युवाओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक, व्यसनों से दूर और सामूहिक प्रयासों से ग्राम विकास की विविध योजनाओं को क्रियान्वित करने की प्रेरणा दी गयी। कार्यक्रम बहुत ही उत्साहवर्धक रहा। गाँववासी साधना, संस्कार और आत्मविकास के लिए प्रेरित हुए।

# लोकजागरण मंच में डॉ. चिन्मय जी ने कहा

## सच हो रही हैं गुरुदेव की भविष्यवाणियाँ

## समय रहते बदल जायें, ताकि पश्चात्ताप से बच जायें

**कुंभराज, गुना (मध्य प्रदेश)**

गायत्री शक्तिपीठ कुम्भराज पर 8 से 11 नवम्बर की तारीखों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, लोक जागरण जनसम्मेलन एवं युवा सम्मेलन आयोजित हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की गरिमा बढ़ायी।

डॉ. चिन्मय जी ने 10 नवम्बर की सायंकालीन सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर प्रदेश के पूर्व मंत्री श्री शिवनारायण मीणा, राघौगढ़ विधायक श्री जयवर्धन सिंह एवं नगर के अनेक गणमान्यों ने उनका भावभरा स्वागत किया। डॉ. चिन्मय ने अपने संदेश में 50 वर्ष पूर्व ग्वालियर में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा की गयी भविष्यवाणियों की चर्चा की, जो आज चरितार्थ होती दिखाई दे रही हैं। समाज में होने जा रहे भावी परिवर्तनों की चर्चा करते हुए उन्होंने लोगों से अपने जीवन को बदलने और सादा जीवन-उच्च विचार के सिद्धांतों को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जो समय रहते बदल जायेंगे, वे ही आगे चलकर सुखी रहेंगे, जो बदलेंगे नहीं उन्हें पछताना अवश्यंभावी है। वे केन्द्र सरकार द्वारा की गयी नोटबंदी के संदर्भ में चर्चा कर रहे थे।

11 नवम्बर को डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने शक्तिपीठ में नवनिर्मित 21 फीट ऊँचे कीर्ति स्तंभ एवं परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन पर आधारित प्रदर्शनी का लोकार्पण किया, गुरुसत्ता के पावन स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' में ऋषियुग्म के चरण कमलों का अनावरण किया। दीपयज्ञ के अवसर पर नगर विधायक ममता मीना की विशेष उपस्थिति में कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाया, श्रोताओं को सृजनात्मक सक्रियता के संकल्प दिलाये।

कार्यक्रम के प्रथम दिन विशाल कलश यात्रा निकली, जिसने पूरे नगर को गायत्री चेतना से ओतप्रोत कर दिया। अगले दिन से हजारों लोगों ने बड़ी श्रद्धा-सद्भावना के साथ यज्ञ भगवान को अपनी आहुतियाँ समर्पित कीं और अपराह्न प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से जीवन जीने के सूत्रों को सीखा-समझा। नगरवासियों के साथ कई गाँवों के लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। सर्वश्री राजेश कापड़िया, रामकरण जी, राधेश्याम मीणा, बैजनाथ धाकड़, सुरेन्द्र कुमार कासट, बनवीर सिंह मीणा, गोपाल जी अध्यापक आदि के कार्यक्रम का सफल आयोजन में विशेष योगदान रहा।

### शक्तिपीठ पर कीर्ति स्तंभ का लोकार्पण, श्रीराम स्मृति उपवन का भूमिपूजन



डॉ. चिन्मय पण्ड्या श्रीराम स्मृति उपवन में वृक्षारोपण करते हुए

डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कुम्भराज में श्रीराम स्मृति उपवन के निर्माण के लिए भूमिपूजन एवं प्रथम वृक्षारोपण किया। इसके लिए नगर पंचायत कुम्भराज ने गायत्री शक्तिपीठ को 110 X 110 फीट भूमि आबंटित की है। भूमिपूजन के अवसर पर विधायक, गणमान्य नागरिक, वरिष्ठ परिजन एवं युवा कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

### अनुयाज › बाल प्रबोधन प्रशिक्षण शिविर

यज्ञ के समय ही अनुयाज का क्रम अनवरत रखने के संकल्प लिये गये। प्रथम कार्यक्रम 10 से 15 दिसम्बर की तारीखों में बाल प्रबोधन प्रशिक्षण शिविर के रूप में आयोजित हुआ। मध्य जोन के केन्द्रीय प्रशिक्षक कैलाश नारायण शर्मा, उपजोन प्रभारी श्री कैलाश नारायण गिरि व संगीत प्रशिक्षकों ने इसका संचालन किया।

प्रशिक्षण शिविर में प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल एवं विद्यालयों में संस्कृति मण्डलों के गठन-संचालन का शिक्षण दिया गया। कई विद्यालयों में 2-2 घंटे की कार्यशालाएँ हुईं। प्रातःकाल कार्यकर्त्ताओं को योग-व्यायाम एवं जीवन विद्या का प्रशिक्षण दिया गया। परिव्राजक श्री प्रेमनारायण मीणा ने स्कूली छात्र-छात्राओं को प्रज्ञागीत, युगसंगीत का प्रशिक्षण भी दिया।

# छत्तीसगढ़ में चल रही है पारिवारिक युवा सम्मेलनों की श्रृंखला

छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संगठन ने युवा क्रांति वर्ष के युवा जोड़ो अभियान को गति देने के लिए पारिवारिक सम्मेलनों की श्रृंखला आरंभ की है। इनमें कार्यकर्त्ताओं के बेटे-बेटी, बहू-दामाद आदि को मुख्य रूप से आमंत्रित किया जा रहा है। उन्हें संसार की अद्वितीय अवतारी चेतना परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के आदर्श, सिद्धांतों का, उनकी युग निर्माण योजना का परिचय कराया जा रहा है। इसके साथ ही आह्वान किया जा रहा है कि वे सांसारिक भटकावों से उबरें, अपने अभिभावकों के पद्‌चिह्नों का अनुसरण करें और युग परिवर्तन के महान कार्य में अपनी प्रतिभा का नियोजन करते हुए जीवन धन्य बनायें।

**हर जिले में होंगे सम्मेलन, 8 जिलों में सम्पन्न**

- प्रो. कुन्ती साहू ने कहा कि समाज को आज उपदेश से नहीं आचरण से शिक्षा देने वाले युवाओं की आवश्यकता है। उन्होंने पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये पंचशीलों की साधना करने और युवा आदर्श प्रस्तुत करने का आह्वान किया।
- कोरबा में सबसे अधिक लगभग 700 परिजनों ने भागीदारी की।
- प्रत्येक जिले में पारिवारिक सम्मेलन करने की योजना है, लेकिन उपस्थित युवाओं ने ब्लॉक स्तर पर भी ऐसे सम्मेलन आयोजित करने का आह्वान किया।

ऐसे एक दिवसीय पारिवारिक सम्मेलन पूरे प्रदेश में किये जाने की योजना है। समाचार लिखे जाने तक बिलासपुर, कोरबा, जांजगीर-चांपा, रायगढ़, जशपुर, अंबिकापुर, बलरामपुर एवं सूरजपुर सहित 8 जिलों में यह आयोजन सम्पन्न हो चुके थे। प्रत्येक शिविर में सैकड़ों की संख्या में युवाओं ने भाग लिया। प्रत्येक शिविर का संचालन शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री नेमूराम साहू, युवा प्रकोष्ठ के प्रान्तीय संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर एवं प्रो. कुन्ती साहू ने किया। सम्मेलनों में युवाओं की मनःस्थिति, आज की परिस्थितियाँ और उनके दुष्प्रभाव, युवाओं के समक्ष चुनौतियाँ व उनके समाधान, भावी संभावनाएँ, मिशन की विशेषता और समाज को उनकी आवश्यकता जैसे अनेक विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। बड़ी संख्या में युवाओं को मिशन के सृजनात्मक आन्दोलनों में सहभागी बनाने में सफलता मिली। इस आशय के संकल्प युवाओं ने लिये।

अपनी आंतरिक शांति को किसी दूसरे के व्यवहार के कारण भंग मत होने दो। - दलाई लामा

# जीवन को लयबद्ध करने वाला गीत है गीता - डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

## 'दैनंदिन जीवन में गीता' विषय पर दिव्य भारत संघ (दिया) मुम्बई का वार्षिक सम्मेलन

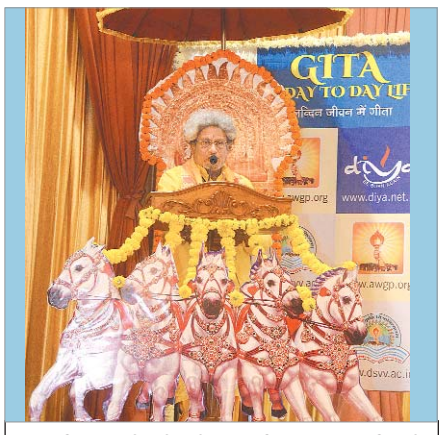


### खुशी चाहते हो तो खुशी बाँटना सीखो

**(आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी)**

• गीता अर्जुन के माध्यम से हर व्यक्ति को दिया गया भगवान का संदेश है। यह दैनंदिन जीवन में पान करने वाला अमृत है। यह युद्धभूमि में हथियार डाल चुके अर्जुन के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन समर लड़ रहे हर उस व्यक्ति के लिए रसायन है जो दैनंदिन में आने वाली समस्याओं से हताश, निराश, परेशान होते और जीवन से भागते दिखाई देते हैं।

• आज जीवन की लय बिगड़ गयी है, यही दुःख, शोक, अवसाद का कारण है। गीता जीवन का गीत है। इसके सूत्र सम्यक जीवन जीने का पाठ पढ़ाते हैं। कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग द्वारा अहंकार, आसक्ति और अज्ञान से मुक्ति का मार्ग बताते हैं।

• खुशी चाहते हो तो खुशी बाँटना सीखो। मन को अपना मित्र बनाओ। भावनाओं की नकारात्मकता मनोरोगों को जन्म देती है।

• गीता की यात्रा मानवीय प्रेम से ईश्वर प्रेम की यात्रा है। हर अंतिम व्यक्ति तक गीता का ज्ञान पहुँचे, मोहान्ध धृतराष्ट्र की तरह कोई न सोचे कि मेरे बच्चों का क्या होगा?

**गीता की शिक्षाएँ:-** 1. परमात्मा के निमित्त जीवन जीने से अहंकार और आसक्ति का नाश होता है।
2. जिस जीवन में समत्व है, प्रकृति के साथ साहचर्य है, वही जीवन आनन्ददायी होता है।
3. अपना जीवन परमात्मा को समर्पित करने वाला भक्त कभी नष्ट नहीं होता, परेशान नहीं होता, उसकी दुर्बुद्धि नहीं जागती।

### गुग्गल ऑफ गीता हैं डॉ. प्रणव जी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी 'गुग्गल ऑफ गीता' के नाम से विख्यात हैं। उनका जीवन आदर्शों की खान है। उनके जीवन की गहराइयों में एक से एक रत्न छिपे हैं, गीता के सूत्र चरितार्थ होते दिखाई देते हैं। • **जतीन दवे, प्रमुख कार्यकर्ता, दिया मुम्बई**

### गीताऽमृतं

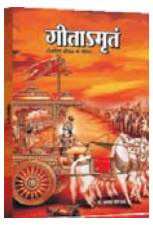


आदरणीय डॉ. साहब ने हाल ही में एक पुस्तक लिखी है 'गीताऽमृतं'। सेमीनार में दिये उद्बोधन में उन्होंने इसी पुस्तक का सारांश प्रस्तुत किया। सेमीनार के अंत में यह पुस्तक श्रोताओं में निःशुल्क वितरित भी की गयी।

गीता के श्लोक गाते बाल संस्कार शाला अणुशक्ति नगर के बच्चे

### दिया, मुम्बई की अभिनव योजना

दिया, मुम्बई के सदस्य, सैकड़ों समर्पित युवा हर वर्ष अलग-अलग विषयों को आधार बनाकर विचार क्रांति अभियान को गति देते रहे हैं। हर वर्ष के अभियान का शुभारंभ एक बृहद् सम्मेलन के साथ होता है। इस वर्ष का विषय चुना गया है- 'दैनंदिन जीवन में गीता'। दिया द्वारा पूरे वर्ष सेमीनार, यज्ञ, दीपयज्ञ, शिविर आदि के कार्यक्रमों के द्वारा इसी विषय को आधार बनाकर परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माणी सूत्रों को जनजीवन में प्रतिष्ठित करने के प्रयास किये जायेंगे।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी योगी सभागृह, दादर के विशाल सम्मेलन को संबोधित करते हुए (इंसेट में)

वर्ष-2017 के अभियान का शुभारंभ दादर, मुम्बई के योगी सभागृह में 17 दिसम्बर को आयोजित बृहद् सम्मेलन के साथ हुआ। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इसके मुख्य वक्ता तथा विशिष्ट अतिथि स्वामिनी विमलानन्दा, चिन्मय मिशन और बहन शिवानी, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी थे।

कार्यक्रम के आरंभ में अखिल विश्व गायत्री परिवार की संक्षिप्त जानकारी देने वाली डॉक्यूमेण्ट्री दिखाई गयी। तत्पश्चात् भाभा एटोमिक रिसर्च सेण्टर, मुम्बई में गायत्री परिवार द्वारा चलायी जा रही बाल संस्कार शाला के बच्चों ने अपनी मधुर लालित्यपूर्ण वाणी में गीता के श्लोकों का उच्चारण किया।

सेमीनार का औपचारिक शुभारंभ आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के साथ स्वामिनी विमलानंदा-चिन्मय मिशन एवं ब्रह्मकुमारी बहन शिवानी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। गायत्री परिवार मुम्बई के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री मनुभाई एवं कई अन्य लोगों ने मंचासीन अतिथिगणों का भावभरा स्वागत किया। शांतिकुंज के युग गायकों की टोली ने ''आप हैं गुरुरूप भगवन, आप ही दिनमान हैं....'' गीत प्रस्तुत किया।

आद. डॉ. प्रणव जी, सिस्टर शिवानी, स्वामिनी विमलानंदा दीप प्रज्वलन के साथ सेमीनार का शुभारंभ करते हुए

सभा के अंत में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों की टीम ने एक मार्मिक नाटिका प्रस्तुत की। कृष्ण, अर्जुन, धृतराष्ट्र, संजय एवं सूत्रधार समय के संवादों ने वर्तमान जीवन की समस्याओं को उकेरा और गीता के सूत्रों के माध्यम से उनके समाधान सुझाये।

### अथक परिश्रम, सुनियोजित प्रयास

पूरा कार्यक्रम बड़ा ही सुनियोजित था। लगभग 300 कार्यकर्त्ताओं ने पिछले चार माह के हर रविवार को इसकी तैयारियों में नियोजित किया। सज्जा, सुरक्षा, पंजीयन, मीडिया, जनसंपर्क, सज्जा, जलपान जैसे 16 विभागों की टीम तैयार की गयी। सर्वश्री जतीन दवे, दिनेश विजयवर्गीय, हितेश जोशी, सुजाता सोपारकर, शुचिता शेट्टी, डॉ. वरुण मानेक आदि के नेतृत्व में सभी कार्यकर्त्ताओं ने अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी श्रद्धा-निष्ठापूर्वक निभाईं।

कार्यक्रम की सफलता में आईटी टीम का विशेष योगदान रहा। उनकी चौबीसों घंटे की अथक सक्रियता के कारण ऑनलाइन 1300 रजिस्ट्रेशन हुए। वैज्ञानिक, बैंकर्स, शिक्षाविद, प्रशासनिक अधिकारी, उद्यमी, बड़ी कम्पनियों के अधिकारी, जज, वकील, विद्यार्थी आदि हर वर्ग के लगभग 2500 लोगों ने इसका लाभ लिया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के आचार्यों की प्रस्तुति

### गीता में वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान

अपने अभिभावक आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के सान्निध्य से उल्लसित विचार क्रांति अभियान के अग्रदूत-दिया, मुम्बई के प्राणवान कार्यकर्त्तागण

### गीता का संदेश : मनःस्थिति बदलो तो परिस्थिति बदल जायेगी

**स्वामिनी विमलानंद**

'धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे' का अर्थ 'क्षेत्रे-क्षेत्रे धर्म कुरु' भी लिया जा सकता है, अर्थात् राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य, अध्यात्म आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म का समावेश हो।

व्यक्ति के सामने केवल परिस्थितियाँ आती हैं। मुसीबत तो वह अपनी मनःस्थिति के कारण मान लेता है। गीता कहती है मनःस्थिति बदलो तो परिस्थिति बदल जायेगी। जब अर्जुन अवसाद ग्रस्त था तब भी और जब वह युद्ध करने के लिए तैयार हो गया तब भी परिस्थिति तो वही थी, बस भगवान के उपदेश को सुनकर अर्जुन की मनःस्थिति बदल गयी थी।

परमात्मा का प्रेम सब पर समान है। वह किसी से पक्षपात नहीं करता। हमारे सुख-दुःख का कारण तो हमारा अपना पुरुषार्थ ही है। अर्जुन का गांडीव पुरुषार्थ का प्रतीक है। जब उसने गांडीव छोड़ दिया, अर्थात् पुरुषार्थ त्याग दिया तो वह शोकग्रस्त हो गया और जब गांडीव पुनः धारण कर लिया तो अवसाद नष्ट हो गया।

### अच्छे कर्मों से करें पिछले कुसंस्कारों का क्षय

**ब्रह्मकुमारी बहन शिवानी**

हर व्यक्ति जन्म-जन्मान्तरों के कर्म और संस्कारों के साथ इस दुनिया में आता है। उन्हीं का प्रतिफल हमें भोगना पड़ता है। अपने आत्म स्वरूप को पहचानो, तद्नुरूप अपने कर्म को श्रेष्ठ बनाते चलो। किसी का तिरस्कार-दुर्व्यवहार हमारे पूर्व कर्म या दूसरों के कुसंस्कार का परिणाम हो सकते हैं। उसका प्रतिउत्तर प्रेम और अच्छे व्यवहार से दो ताकि बुरे कर्मों के भोग समाप्त होता चले। अच्छे कर्मों का प्रतिफल आगे अच्छा ही होगा।

## भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

### शांतिकुंज में आयोजित हो रहे शिविर

**जिला एवं प्रान्त प्रमुखों की राष्ट्र स्तरीय संगोष्ठी**
**26 फरवरी से 28 फरवरी 2017**

**राष्ट्रीय प्रावीण्य छात्र प्रतिभा परिष्कार शिविर**
**20 मई से 23 मई 2017**

**शिक्षक शिविर :**

| | | |
|---|---|---|
| 10 मई से 12 मई | उड़ीसा, |
| 15 मई से 17 मई | गुजरात |
| 26 मई से 28 मई | मध्य प्रदेश, पं.बंगाल |
| 6 जून से 8 जून | राजस्थान, |
| 10 जून से 12 जून | महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़ |
| 16 जून से 18 जून | उत्तर प्रदेश, |
| 21 जून से 23 जून | बिहार, दिल्ली, हिमांचल, उत्तराखण्ड |
| 26 जून से 28 जून | झारखण्ड, आसाम,द.भारत |

**नोट :-** • तारीखों में परिवर्तन संभव है।
- प्रतिभागियों की संख्या सीमित है।
- सम्बद्ध जिला एवं प्रांतीय इकाइयों को विस्तृत जानकारियाँ भेज दी गयी हैं।
- जिन्हें जानकारी न मिली हो, या कोई असमंजस हो तो आवश्यक जानकारी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ, शांतिकुंज से ई-मेल : bsgp@awgp.org अथवा फोन : 9258369722 से प्राप्त की जा सकती है।

### मीडिया का सहयोग मिला

मिनल मित्तल, गायत्री नायक, विजय पुरोहित, अनुप्रिया देशमुख के प्रयासों से बिज़नेस स्टाण्डर्ड, फ्री प्रेस जरनल, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, नवराष्ट्र टाइम्स आदि प्रमुख समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित हुए। दूरदर्शन मराठी चैनल और एफएम चैनल ने भी समाचार व साक्षात्कार प्रसारित किये।

प्रज्ञा अभियान
16 जनवरी 2017

# देव संस्कृति विश्वविद्यालय में है जीवन का उत्थान, संसार का समाधान

## 30वें ज्ञानदीक्षा समारोह में मुख्य अतिथि स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती जी ने विद्यार्थियों को दिया मार्मिक संदेश

मंच पर मुख्य अतिथि स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती का स्वागत करते कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, साथ में बायें प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, दायें कुलपति श्री शरद पारधी तथा दोनों ओर ज्ञानदीक्षित हो रहे छात्र-छात्राएँ

### गीता हर विद्यालय, महाविद्यालय में पढ़ाई जाये

**आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देसंविवि**

गीता जीवन प्रबंधन का समग्र ग्रंथ है। यह जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करती है, व्यक्ति को सही रूप में जीवन जीना सिखाती है। मैं चाहता हूँ कि गीता देश के हर विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाये। मैं इसके लिए निरंतर प्रयास करता रहूँगा। गीता देसंविवि के पाठ्यक्रम में समाहित है। गीता का स्वाध्याय हर व्यक्ति को करना चाहिए।

### गायत्री सबकी उपास्य है

**स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती, मुख्य अतिथि अध्यक्ष हिंदू धर्म आचार्य सभा**

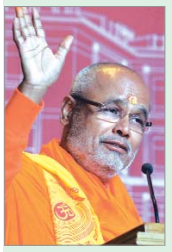

मनुष्य में बुद्धि की महत्ता सर्वोपरि है, उसका स्थान शीर्ष पर है। बुद्धि ठीक है तो जीवन ठीक है। धर्म-संप्रदाय कोई भी हो, बुद्धि को श्रेष्ठता की ओर ले जाने की उपासना सब करते हैं, अर्थात् गायत्री सबकी उपास्य है। आचार्य जी (परम पूज्य गुरुदेव) की महती कृपा है कि उन्होंने बुद्धि की रक्षा के लिए गायत्री मंत्र को पुनर्जीवित कर दिया। आंतरिक मूल्यों में दिवालिया होते जा रहे समाज को यह देव संस्कृति विश्वविद्यालय बुद्धि की रक्षा करना सिखाता है।

### परिस्थिति नहीं, मनःस्थिति बदलें

**डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय**

हर व्यक्ति आज अपनी परिस्थितियों को बदलने की सोचता है, जो उसके वश में नहीं है, लेकिन मनःस्थिति को नहीं बदलता जिसे वह आसानी से बदल सकता है। वह चाहे तो अपने मन, बुद्धि, विचारों को बदलकर उस सुख और आनन्द की अनुभूति कर सकता है जो ऊँचे भोग-विलासों से भी संभव नहीं है। हम चाहते हैं कि जब आप यहाँ से लौटें तो अपने चिंतन, चरित्र, व्यवहार और गुण, कर्म, स्वभाव को उत्कृष्ट बनाकर लौटें।

### आप कुछ विशेष हैं

आप यहाँ इसलिए उपस्थित हैं क्योंकि आप कुछ विशेष हैं। उन विशेषताओं को उभारने का, भावनात्मक उत्थान का यहाँ आपको भरपूर वातावरण मिलेगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यहाँ आपको सार्थक जीवन की अनुभूति होगी, परम पूज्य गुरुदेव का सूक्ष्म संरक्षण मिलेगा। अपने जिज्ञासु भाव को बनाये रखें तो यहाँ हर पल आपको कुछ न कुछ सीखने का अवसर मिलेगा।

कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के 30वें ज्ञानदीक्षा समारोह में अपने विद्यार्थियों में सार्थक जीवन जीने की हूक जगाते हुए इन विचारों के साथ नवप्रवेशी विद्यार्थियों को ज्ञान दीक्षित किया। उन्होंने अपने आशीर्वचनों में विद्यार्थियों को जीवन का उद्देश्य बताया। उन्हें हताशा, निराशा के दलदल में फँसाने वाली युवाओं की वर्तमान सोच के विपरीत जीवन विद्या का मर्म जानने और लीक से हटकर कुछ विशेष करने के लिए प्रेरित किया।

यह ज्ञानदीक्षा समारोह देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में दिनांक 2 जनवरी को सम्पन्न हुआ। इसमें योग, धर्म विज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का ज्ञानदीक्षा संस्कार हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संत, हिन्दू धर्म आचार्य सभा के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी दयानंद सरस्वती के परम शिष्य स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंचासीन मुख्य अतिथि, माननीय कुलाधिपति जी, कुलपति श्री शरद पारधी एवं प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। युग गायकों की गीत प्रस्तुति ने सद्गुरु के प्रति, जीवन-आदर्शों के प्रति समर्पण भाव बढ़ाते हुए श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। कुलपति जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में अतिथियों का स्वागत करते हुए ज्ञानदीक्षा की पृष्ठभूमि बतायी।

### यह विश्वविद्यालय असाधारण है

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत बड़े उत्साहभरे शब्दों से किया। उन्होंने कहा कि आप किसी साधारण विश्वविद्यालय का हिस्सा नहीं बन रहे। यह चरित्र को प्रामाणिक एवं व्यक्तित्व को उदात्त बनाने वाला, जीवन के उद्देश्य में ऊँचाइयाँ लाने वाला, साक्षरता के साथ जीवन की सार्थकता का बोध कराने वाला विश्वविद्यालय है। यह आप पर निर्भर है कि आप यहाँ से एक कागज का टुकड़ा (डिग्री) लेकर लौटते हो या एक कीमती चीज-जीवन को उदात्त बनाने वाले सूत्रों को धारण करते हैं।

### प्रगति की सही दिशा-धारा

मुख्य अतिथि स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती जी ने बड़े सरल भाव से अत्यंत गूढ़ ज्ञान दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन एक चाभी की तरह है जो ताला खोल भी सकती है और बंद भी कर सकती है। यह उसके अपने विवेक पर निर्भर है कि वह उसे किस दिशा में घुमाता है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय वह विश्वविद्यालय है जहाँ अपना ही नहीं, सारे संसार का ताला खोलना सिखाया जाता है।

परिवर्तन सारे संसार में हो रहे हैं। उसकी दिशा सही है या गलत, यह स्वयं सोचें और अपना सही मार्ग खोजें। दुनिया आज विकास की ओर बढ़ रही है तो घर-परिवार, देश-समाज और पूरे विश्व में हिंसा, अशान्ति-उद्वेग क्यों बढ़ रहे हैं?

इससे पूर्व कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों का ज्ञानदीक्षा संस्कार कराया। उन्होंने विद्यार्जन के समय अपनाये जाने आर्ष ग्रंथों में वर्णित अनुशासन सूत्र सभी गुरुजनों की ओर से विद्यार्थियों को समझाये, विद्यार्थियों ने उनके प्रति अपनी सहमति प्रदान की। श्री सूरज प्रसाद शुक्ल एवं श्री गोपाल शर्मा ने ज्ञानदीक्षा का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया। समारोह के अंत में मंचासीन अतिथियों ने ज्ञानदीक्षित विद्यार्थियों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतीक-बैज और उपवस्त्र धारण कराये।

माननीय कुलाधिपति जी ने समारोह के आरंभ में मुख्य अतिथि महोदय का पुष्पगुच्छ अर्पण करते हुए स्वागत किया और अंत में देव संस्कृति विवि. का प्रतीक चिह्न, सृजना में बनी गायत्री महामंत्र की शॉल तथा युगऋषि की अनमोल धरोहर उनका साहित्य भेंट करते हुए भावभरा सम्मान किया।

## स्काउट-गाइड की 17वीं राष्ट्रीय जम्बूरी में शांतिकुंज की भागीदारी

### शांतिकुंज में आयोजित हुआ उत्तराखंड की टीम का पूर्व तैयारी शिविर

### मैसूर गये दल में गायत्री विद्यापीठ के 22 विद्यार्थी शामिल

कर्नाटक के मैसूर में इस वर्ष 29 दिसम्बर से 4 जनवरी की तारीखों में 17वीं राष्ट्रीय जम्बूरी आयोजित हुई। उत्तराखंड से14 जनपदों के स्काउट, गाइड, रोवर, रेंजर्स ने इसमें भाग लिया। 26 दिसम्बर को अपने प्रदेश से रवाना होने से पूर्व राज्य स्काउट-गाइड प्रशिक्षण केन्द्र शांतिकुंज में विशेष तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। 128 स्काउट-गाइड, 16 रोवर-रेंजर तथा 46 स्काउटर ने इसमें भाग लिया।

पूर्वाभ्यास करती रेंजर्स

इस शिविर में प्रतिभागियों को बैण्ड डिस्प्ले, स्कील ओ रामा, एडवेंचर, फूड प्लाजा, राज्य की विशेष झाँकी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कलर पार्टी, परेड, पायनियरिंग, तम्बू निर्माण, साज-सज्जा, आयुर्वेद, आदर्श ग्राम एवं मॉडल गाँव आदि प्रदर्शनी निर्माण संबंधी कार्यक्रमों की अंतिम तैयारी करायी गयी। शांतिकुंज व्यवस्थापक आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने इनका निरीक्षण किया। राज्य प्रशिक्षण आयुक्त श्री रामसिंह नेगीए एसटीसी नरेन्द्र नेगी, केशर सिंह, आशीष नेगी, शांति रतूड़ी, डॉ. चंदोला, मधु, पुष्पा, मोहम्मद हसन प्रशिक्षण में प्रमुख सहयोगी थे।

स्काउट गाइड जिला युग निर्माण (गायत्री विद्यापीठ एवं देसंविवि, शांतिकुंज) के 26 स्काउट-गाइड स्काउट मास्टर श्री सीताराम सिन्हा, श्री मंगल सिंह गढ़वाल, सोमेश्वर तांडी एवं सविता भागभोले के नेतृत्व में इस जम्बूरी में शामिल हुए।

## आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ, शांतिकुंज की सेवाएँ

### आठ गाँवों में गरम कपड़े बाँटे

### 300 परिवार लाभान्वित हुए

शांतिकुंज प्रतिनिधि जरूरतमंद ग्रामीणों को ऊनी वस्त्र देते हुए

शांतिकुंज ने सर्दियाँ आरंभ होने से पूर्व 8 गाँवों में करीब 300 परिवारों की सहायता करते हुए उन्हें गर्म कपड़े व कम्बल प्रदान किये। यह सहायता हरिद्वार जिले के लक्सर क्षेत्र के गाँव सेठपुर, करनपुर, बसेडाखादर, बहादुरपुर, चन्द्रपुरीकलाँ आदि गाँवों में जाकर जरूरतमंदों को जाकर प्रदान की गयी। शांतिकुंज से आपदा प्रबंधन दल के सदस्य पुन्नूराम नेताम, राजकुमार आदि आवश्यक कपड़े लेकर इन गाँवों में पहुँचे और जरूरतमंदों का सर्वे किया। प्रत्येक परिवार को दो-दो कम्बल व कपड़ों के सेट दिये गए। स्थानीय प्रतिनिधि श्री वेदपाल, श्रवण धीमान व धीरसिंह आदि ने इस कार्य में प्रशंसनीय सहयोग दिया।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

Publication date: 12.1.2017
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT VIDE NO.
WPP/ 04
RENEWED 2015-2017